CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2008 with Solution PDF-Set 2/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 99

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1, 4, 6, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जब कभी मछेरे को फेंका हुआ
फैला जाल
समेटते हुए, देखता हूँ
तो अपना सिमटता हुआ
'स्व' याद हो आता है —
जो कभी समाज, गाँव और
परिवार के वृहत्तर रकबे में
समाहित था
'सर्व' की परिभाषा बनकर
और अब केन्द्रित हो
गया हूँ, मात्र बिन्दु में ।
जब कभी अनेक फूलों पर
बैठी, पराग को समेटती
मधुमक्खियों को देखता हूँ
तो मुझे अपने पूर्वजों की
याद हो आती है,
जो कभी फूलों को रंग, जाति, वर्ग
अथवा कबीलों में नहीं बाँटते थे
और समझते रहे थे कि
देश एक बाग है,
और मधु-मनुष्यता
जिससे जीने की अपेक्षा होती है ।
किन्तु अब
बाग और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है
मात्र संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ । [10 अंक]

1(क). कविता में प्रयुक्त 'स्व' शब्द से कवि का क्या अभिप्राय है ? उसकी जाल से तुलना क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित होता है। यहाँ 'स्व' व्यक्ति की आत्मचेतना और अपनेपन के दायरे का सूचक है।
- फैले जाल का समेटा जाना विस्तार से संकुचन की ओर जाने का दृश्य है; इसी समानता से कवि अपनी स्थिति समझाता है।

चरण 1: स्व का प्रसंगगत अर्थ समझिए 'स्व' से कवि का अभिप्राय अपने व्यक्तित्व, आत्मबोध तथा अपनेपन की भावना से है। पहले इस अपनेपन में परिवार, गाँव और समाज के लोग भी सम्मिलित थे। इसलिए वह केवल निजी हितों तक सीमित अहं नहीं था, बल्कि दूसरों से जुड़े हुए अस्तित्व का अनुभव था। 'सर्व' की परिभाषा बनकर रहने का उल्लेख इसी व्यापकता को स्पष्ट करता है।

चरण 2: जाल से तुलना का आधार बताइए मछेरे का जाल फैलने पर बड़े क्षेत्र को घेरता है, किंतु समेटते समय उसका फैलाव घटता जाता है। इसी तरह कवि की आत्मीयता का क्षेत्र पहले व्यापक था और अब केवल अपने तक सिमट गया है। अतः तुलना का आधार जाल का आकार नहीं, बल्कि दोनों में होने वाला फैलाव का संकुचन है।

चरण 3: निष्कर्ष 'स्व' कवि का आत्मबोध और अपनेपन की भावना है। समाज तक फैले इस भाव का निजी अहं तक सिमटना, फैले

जाल के समेटे जाने जैसा है।

त्वरित सुझाव: 'स्व', 'सर्व' और 'मात्र बिन्दु' को साथ पढ़कर अर्थ लिखिए; जाल की तुलना में फैलने और सिमटने की समानता स्पष्ट कीजिए।

1(ख). कवि का 'स्व' पहले कैसा था और अब कैसा हो गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पहले और अब का अंतर बताने के लिए कविता में आए विपरीत संकेतों को पहचानना आवश्यक है।
- 'सर्व' व्यापक सामाजिक आत्मीयता का और 'मात्र बिन्दु' सीमित व्यक्तिगत चेतना का संकेत है।

चरण 1: पहले के स्व का स्वरूप बताइए पहले कवि का 'स्व' परिवार, गाँव और समाज के विस्तृत क्षेत्र में समाहित था। वह दूसरों को भी अपना समझता था और उसका व्यक्तित्व सामूहिक जीवन से जुड़ा था। इसी कारण कवि उसे 'सर्व' की परिभाषा कहता है। व्यक्ति और समुदाय के बीच आत्मीयता का संबंध था; अपनेपन की सीमा निजी जीवन पर समाप्त नहीं होती थी।

चरण 2: वर्तमान स्थिति और कारण समझाइए अब वही 'स्व' 'मात्र बिन्दु' में केंद्रित हो गया है। इसका आशय है कि कवि अपने तक सीमित हो गया है तथा व्यापक सामाजिक अपनापन कम हो गया है। कविता के अगले अंश में रंग, जाति और वर्ग के विभाजन तथा मनुष्यता के जड़ हो जाने का उल्लेख है। इस संदर्भ में संकुचन का कारण स्वार्थपरता, संकीर्ण दृष्टि और मानवीय जुड़ाव का क्षय समझ में आता है।

चरण 3: निष्कर्ष पहले कवि का 'स्व' समाजव्यापी और आत्मीय था; अब स्वार्थ तथा संकीर्णता के कारण वह अपने तक सीमित, बिन्दु जैसा हो गया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को पहले, अब और कारण के क्रम में लिखिए; 'सर्व' और 'मात्र बिन्दु' से दोनों स्थितियों का प्रमाण दीजिए।

1(ग). कवि को अपने पूर्वजों की याद कब और क्यों आती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में 'कब' दृश्य की पहचान माँगता है और 'क्यों' उस दृश्य से उत्पन्न स्मृति का कारण पूछता है।
- कविता में विभिन्न फूल विविध मनुष्यों का और मधु मानवीय गुणों का संकेत देता है।

चरण 1: स्मृति जगाने वाला दृश्य पहचानिए कवि जब अनेक फूलों पर बैठी हुई मधुमक्खियों को पराग समेटते देखता है, तब उसे अपने पूर्वजों की याद आती है। मधुमक्खियाँ किसी एक फूल तक सीमित नहीं रहतीं; अनेक फूलों से पराग लेकर मधु बनाती हैं। इस दृश्य में अनेकता के बीच उपयोगी और मधुर तत्व ग्रहण करने का भाव निहित है।

चरण 2: पूर्वजों से उसकी समानता समझाइए पूर्वज भी मनुष्यों को रंग, जाति, वर्ग अथवा कबीलों के आधार पर अलग-अलग नहीं बाँटते थे। वे पूरे देश को एक बाग और मनुष्यता को उसका मधु मानते थे। जैसे मधुमक्खियाँ विविध फूलों से पराग लेती हैं, वैसे ही पूर्वज विविध मनुष्यों में समान मानवीयता देखते थे। दोनों में भेदभाव से दूर रहकर विविधता को स्वीकार करने की समानता कवि को यह स्मरण कराती है।

चरण 3: निष्कर्ष अनेक फूलों से पराग लेती मधुमक्खियों को देखकर कवि को पूर्वज याद आते हैं, क्योंकि वे भी जाति-वर्ग आदि का भेद किए बिना सबमें मनुष्यता देखते थे।

त्वरित सुझाव: पहले मधुमक्खियों का दृश्य लिखिए, फिर पूर्वजों की भेदभावरहित दृष्टि से उसकी समानता जोड़िए; दोनों माँगें अलग रहें।

1(घ). उसके पूर्वजों की विचारधारा पर टिप्पणी लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी विचारधारा पर टिप्पणी उसके मूल विश्वास और व्यवहार से जुड़े प्रमाण पर आधारित होनी चाहिए।
- देश को बाग और मनुष्यता को मधु कहना विविधता में एकता तथा मानवीयता के महत्त्व को व्यक्त करता है।

चरण 1: भेदभाव के प्रति उनका दृष्टिकोण पहचानिए कवि के पूर्वजों की विचारधारा उदार, समतावादी और मानवतावादी थी। वे लोगों को रंग, जाति, वर्ग अथवा कबीलों में बाँटकर नहीं देखते थे। उनके लिए व्यक्ति की पहचान का मुख्य आधार उसकी मनुष्यता थी। इसलिए सामाजिक विविधताओं के रहते हुए भी वे मनुष्यों में आत्मीयता और समानता का संबंध स्वीकार करते थे।

चरण 2: देश और मनुष्यता संबंधी विश्वास स्पष्ट कीजिए पूर्वज देश को ऐसा बाग मानते थे जिसमें अनेक प्रकार के फूल साथ रहते हैं। इस बाग का मधु मनुष्यता है, जिससे जीवन को सार्थकता और मधुरता मिलती है। इस रूपक से स्पष्ट है कि वे विविधता को विभाजन का कारण नहीं बनाते थे। उनका आदर्श सबके साथ मिलकर रहना तथा प्रेम, सद्भाव और मानवता को जीवन में महत्त्व देना था।

चरण 3: निष्कर्ष पूर्वजों की विचारधारा उदार और मानवतावादी थी। वे जाति-वर्ग के भेद से ऊपर उठकर देश की विविधता में एकता तथा मनुष्यता को जीवन का आधार मानते थे।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में केवल 'अच्छी विचारधारा' न लिखें; भेदभाव का निषेध और देश-बाग तथा मनुष्यता-मधु के रूपक से उसकी विशेषता स्पष्ट करें।

1(ङ). निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

"और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यपंक्ति का आशय उसके प्रतीकात्मक अर्थ और आसपास के संदर्भ से स्पष्ट किया जाता है।
- शिलालेख और संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ ऐसे आदर्शों के प्रतीक हैं जो स्मृति में सुरक्षित हैं, पर जीवन में सक्रिय नहीं हैं।

चरण 1: प्रतीकों का अर्थ खोलिए शिलालेख पत्थर पर लिखे हुए स्मरण का बोध कराता है। यहाँ मनुष्यता का उसमें जकड़ जाना यह नहीं बताता कि मनुष्यता सचमुच पत्थर बन गई है। इसका अर्थ है कि मानवता के आदर्श केवल लिखित उपदेशों, ऐतिहासिक स्मृतियों और प्रशंसा तक सीमित रह गए हैं। अगली पंक्ति में उन्हें संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ कहना इसी निष्क्रियता को और स्पष्ट करता है।

चरण 2: वर्तमान जीवन पर कवि की टिप्पणी समझाइए पूर्वजों के जीवन में मनुष्यता जाति-वर्ग से परे आत्मीय संबंधों का सक्रिय आधार थी। अब भेदभाव और संकीर्णता बढ़ने से वही भावना व्यवहार में कम दिखाई देती है। लोग उसके आदर्श को याद तो करते हैं, पर उसे जीवन में उतार नहीं पाते। कवि इस स्थिति पर दुख व्यक्त करता है कि जीवन को मधुर बनाने वाली मानवीयता केवल अतीत की निर्जीव धरोहर बनकर रह गई है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्तियों का आशय है कि प्रेम, समानता और सद्भाव के मानवीय आदर्श अब व्यवहार में सक्रिय रहने के स्थान पर केवल लिखित स्मृतियों और इतिहास तक सीमित हो गए हैं।

त्वरित सुझाव: 'शिलालेख' को लिखित स्मृति और 'जड़ वस्तुएँ' को निष्क्रियता से जोड़िए; आशय में जीवन के व्यवहार से मानवता के दूर होने की बात स्पष्ट करें।

अथवा

1. तू हिमालय नहीं, तू न गंगा-यमुना
तू त्रिवेणी नहीं, तू न रामेश्वरम्
तू महाशील की है अमर कल्पना
देश ! मेरे लिए तू परम वंदना ।
मेघ करते नमन, सिंधु होता चरण,
लहलहाते सहस्रों यहाँ खेत-वन ।
नर्मदा-ताप्ती, सिंधु, गोदावरी,
हैं कराती युगों से तुझे आचमन ।
तू पुरातन बहुत, तू नए से नया
तू महाशील की है अमर कल्पना ।
देश ! मेरे लिए तू महा अर्चना ।
शक्ति-बल का समर्थक रहा सर्वदा,
तू परम तत्त्व का नित विचारक रहा ।
शांति-संदेश देता रहा विश्व को ।
प्रेम-सद्भाव का नित प्रचारक रहा ।
सत्य औ' प्रेम की है परम प्रेरणा
देश ! मेरे लिए तू महा अर्चना ।

[10 अंक]

1(क). कवि का देश को 'महाशील की अमर कल्पना' कहने से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'महाशील' महान नैतिक चरित्र तथा उदात्त आचरण का बोध कराता है।
- काव्यांश में देश की पहचान भौगोलिक स्थलों के साथ उसके शाश्वत मानवीय आदर्शों से जुड़ी है।

चरण 1: देश की व्यापक पहचान समझिए कवि कहता है कि देश केवल हिमालय, गंगा-यमुना, त्रिवेणी या रामेश्वरम् जैसे पर्वतों, नदियों और तीर्थस्थलों का नाम नहीं है। उसकी वास्तविक महानता उसके उच्च नैतिक चरित्र में है। 'महाशील' कहकर कवि देश की उस उदात्त चेतना को सामने लाता है जो उसके लोगों के जीवन और आचरण को दिशा देती है।

चरण 2: अमर कल्पना का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए काव्यांश में देश को सत्य और प्रेम की प्रेरणा, विश्व को शांति का संदेश देने वाला तथा प्रेम-सद्भाव का प्रचारक बताया गया है। इन्हीं स्थायी आदर्शों की कल्पना 'महाशील' में समाहित है। 'अमर' का आशय है कि समय बदलने पर भी इन मूल्यों का महत्त्व समाप्त नहीं होता। कवि इन चिरस्थायी नैतिक गुणों के कारण देश को अपनी परम वंदना और अर्चना का विषय मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'महाशील की अमर कल्पना' से तात्पर्य है कि देश सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव जैसे चिरस्थायी उच्च नैतिक आदर्शों का मूर्त रूप है, इसलिए वह कवि के लिए वंदनीय है।

त्वरित सुझाव: 'महाशील' का अर्थ उच्च चरित्र और 'अमर' का अर्थ चिरस्थायी लेकर उत्तर लिखिए; काव्यांश के सत्य, प्रेम और शांति से इसे पुष्ट कीजिए।

1(ख). भारत देश पुरातन होते हुए भी नित नूतन कैसे है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'पुरातन' और 'नए से नया' देश की सांस्कृतिक निरंतरता तथा निरंतर ताजगी का संयुक्त बोध कराते हैं।
- काव्यांश में सत्य, प्रेम और शांति ऐसे जीवनमूल्य हैं जिनकी सार्थकता हर युग में बनी रहती है।

चरण 1: देश की पुरातनता का आधार समझिए भारत की संस्कृति और परंपरा बहुत पुरानी है। कविता में नदियों द्वारा 'युगों से' आचमन कराने तथा देश को परम तत्त्व का विचारक कहने से उसकी दीर्घ सांस्कृतिक और चिंतनशील परंपरा का संकेत मिलता है। सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव की उसकी साधना किसी एक समय तक सीमित नहीं रही है। यही निरंतरता उसे पुरातन बनाती है।

चरण 2: नित नूतन बने रहने का अर्थ बताइए प्राचीन होने पर भी देश की चेतना जड़ या निष्क्रिय नहीं है। सत्य और प्रेम की प्रेरणा प्रत्येक नई पीढ़ी को जीवन की दिशा देती है तथा शांति-सद्भाव का संदेश हर युग में उपयोगी रहता है। इस प्रकार अपनी मूल उदात्त भावना को सुरक्षित रखते हुए देश नए समय में भी जीवन और प्रेरणा का स्रोत बना रहता है। पुराने मूल्यों की यह जीवंत प्रासंगिकता ही उसकी नित्य नवीनता है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत अपनी प्राचीन संस्कृति और चिंतन-परंपरा के कारण पुरातन है, किंतु सत्य, प्रेम और शांति के सदैव प्रासंगिक आदर्शों से हर युग को नई प्रेरणा देकर नित नूतन बना रहता है।

त्वरित सुझाव: पुरातनता को लंबी सांस्कृतिक परंपरा से और नूतनता को उन्हीं मूल्यों की हर युग में जीवंत प्रेरणा से जोड़िए।

1(ग). 'तू परम तत्त्व का नित विचारक रहा' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ लिखते समय पंक्ति के प्रमुख शब्दों को काव्यांश के केंद्रीय विचार से जोड़ना चाहिए। यहाँ देश के आध्यात्मिक और नैतिक स्वरूप की प्रशंसा की गई है।
- परम तत्त्व का आशय जीवन और सृष्टि के मूल सत्य से है; नित विचारक रहने का अर्थ उसका निरंतर चिंतन करना है।

चरण 1: मुख्य शब्दों का अर्थ समझिए कवि की पंक्ति 'तू परम तत्त्व का नित विचारक रहा' में भारत को संबोधित किया गया है। परम तत्त्व जीवन और जगत के आधारभूत सत्य का बोध कराता है। विचारक शब्द उस सत्य को जानने, समझने और उस पर मनन करने की प्रवृत्ति को व्यक्त करता है।

चरण 2: काव्यांश से भाव जोड़िए काव्यांश में भारत को शक्ति का समर्थक होने के साथ सत्य, प्रेम और शांति का प्रेरक भी कहा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि उसकी महानता केवल बाहरी सामर्थ्य में नहीं, जीवन के गहरे अर्थ और उच्च मूल्यों पर चिंतन करने वाली परंपरा में भी है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति का भाव है कि भारत सदा जीवन और सृष्टि के परम सत्य का चिंतन करता रहा है। आध्यात्मिक खोज और उच्च जीवन-मूल्यों पर निरंतर मनन उसकी संस्कृति की विशेषता रही है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में परम तत्त्व का अर्थ मूल सत्य और नित का अर्थ निरंतर लिखकर उसे भारत की चिंतन-परंपरा से जोड़िए।

1(घ). देश का सत्कार प्रकृति कैसे करती है ? काव्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने प्रकृति को मनुष्य की तरह देश का आदर करने वाला दिखाया है। इस मानवीकरण में मेघ, सागर, खेत, वन और नदियाँ सम्मिलित हैं।
- उत्तर में प्रत्येक प्राकृतिक तत्त्व के साथ उससे जुड़ी क्रिया लिखनी चाहिए, ताकि सत्कार का पूरा चित्र सामने आए।

चरण 1: मेघ और सागर का सत्कार बताइए 'मेघ करते नमन' से स्पष्ट है कि बादल झुककर देश को प्रणाम करते हुए प्रतीत होते हैं। सागर उसके चरणों में उपस्थित होकर उसका सम्मान करता है। इस चित्रण में देश एक पूज्य व्यक्तित्व बन गया है और प्रकृति उसके प्रति श्रद्धा प्रकट कर रही है।

चरण 2: खेतों, वनों और नदियों की भूमिका समझिए हजारों लहलहाते खेत और वन देश की शोभा तथा समृद्धि बढ़ाते हैं। नर्मदा, ताप्ती, सिंधु और गोदावरी जैसी नदियाँ अपने जल से युगों से उसे आचमन कराती हैं। आचमन की कल्पना देश के सत्कार को पवित्रता और पूजा के भाव से जोड़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रकृति मेघों के नमन, चरणों में उपस्थित सागर, लहलहाते खेतों और वनों तथा नदियों के जल से कराए गए आचमन द्वारा देश का सत्कार करती है। इस प्रकार संपूर्ण प्राकृतिक परिवेश देश के प्रति आदर प्रकट करता है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति के सत्कार का उत्तर लिखते समय मेघ—नमन, सागर—चरण और नदियाँ—आचमन की जोड़ियाँ याद रखें।

1(ङ). "शांति-संदेश ..... रहा" काव्य-पंक्तियों का अर्थ बताते हुए इस कथन की पुष्टि में इतिहास से कोई एक प्रमाण दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्तियों का अर्थ काव्यांश में व्यक्त शांति, प्रेम और सद्भाव के मूल्यों के आधार पर स्पष्ट करना चाहिए।
- प्रश्न में ऐतिहासिक प्रमाण भी माँगा गया है; इसलिए भावार्थ के बाद ऐसा एक उदाहरण दें जिसमें युद्ध के स्थान पर शांति को महत्व मिला हो।

चरण 1: काव्य-पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए 'शांति-संदेश देता रहा विश्व को' और 'प्रेम-सद्भाव का नित प्रचारक रहा' का अर्थ है कि भारत ने संसार को शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की प्रेरणा दी है। उसकी सांस्कृतिक परंपरा मनुष्यों के बीच प्रेम, मेल-जोल और सद्भाव बढ़ाने का संदेश देती रही है।

चरण 2: इतिहास से प्रमाण दीजिए कलिंग युद्ध के रक्तपात से व्यथित होकर सम्राट अशोक ने धम्म और शांति के प्रचार को महत्व दिया। उसने युद्ध द्वारा विजय के स्थान पर नैतिक आचरण, दया और सद्भाव के प्रसार को श्रेष्ठ माना। यह उदाहरण दिखाता है कि भारत में शक्ति के साथ करुणा और शांतिपूर्ण जीवन के आदर्श को भी प्रतिष्ठा मिली।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों में भारत को विश्व में शांति, प्रेम और सद्भाव का संदेश फैलाने वाला देश कहा गया है। कलिंग युद्ध के बाद अशोक का धम्म और शांति के प्रचार की ओर मुड़ना इस कथन का ऐतिहासिक प्रमाण है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न के उत्तर के दो हिस्से रखें: पहले शांति और सद्भाव का भावार्थ, फिर अशोक का संक्षिप्त ऐतिहासिक उदाहरण।

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

वैदिक युग भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था । यही कारण है कि आज तक भारत का मन उस काल की ओर बार-बार लोभ से देखता है । वैदिक आर्य अपने युग को स्वर्णकाल कहते थे या नहीं, यह हम नहीं जानते; किन्तु उनका समय हमें स्वर्णकाल के समान अवश्य दिखाई देता है । लेकिन जब बौद्ध युग का आरम्भ हुआ, वैदिक समाज की पोल खुलने लगी और चिंतकों के बीच उसकी आलोचना आरम्भ हो गई । बौद्ध-युग अनेक दृष्टियों से आज के आधुनिकता-आन्दोलन के समान था । ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के विरुद्ध बुद्ध ने विद्रोह का प्रचार किया था, जाति-प्रथा के बुद्ध विरोधी थे और मनुष्य को वे जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठ या अधम मानते थे । नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार देकर उन्होंने यह बताया था कि मोक्ष केवल पुरुषों के ही निमित्त नहीं है, उसकी अधिकारिणी नारियाँ भी हो सकती हैं । बुद्ध की ये सारी बातें भारत को याद रही हैं और बुद्ध के समय से बराबर इस देश में ऐसे लोग उत्पन्न होते रहे हैं, जो जाति-प्रथा के विरोधी थे, जो मनुष्य को जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठ या अधम समझते थे । किन्तु बुद्ध में आधुनिकता से बेमेल बात यह थी कि वे निवृत्तिवादी थे, गृहस्थी के कर्म से वे भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ समझते थे । उनकी प्रेरणा से देश के हजारों-लाखों युवक, जो उत्पादन बढ़ाकर समाज का भरण-पोषण करने के लायक़ थे, संन्यासी हो गए । संन्यास की संस्था समाज-विरोधिनी संस्था है । [10 अंक]

2(क). वैदिक युग स्वर्णकाल के समान क्यों प्रतीत होता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में किसी युग के मूल्यांकन का कारण लेखक के कथन से ग्रहण करना चाहिए। बाहरी इतिहास के अनुमान जोड़ना आवश्यक नहीं है।
- लेखक ने वैदिक युग की स्वाभाविकता तथा उसके प्रति भारतीय मन के आकर्षण को स्वर्णकाल जैसी अनुभूति से जोड़ा है।

चरण 1: लेखक का स्पष्ट कारण पहचानिए गद्यांश के आरंभ में वैदिक युग को भारत का 'प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल' कहा गया है। यही उसकी प्रमुख विशेषता बताई गई है। इस स्वाभाविकता के कारण वह समय लेखक को आदर्श और आकर्षक दिखाई देता है।

चरण 2: वर्तमान आकर्षण से संबंध बताइए लेखक कहता है कि भारत का मन आज भी उस काल की ओर बार-बार लोभ से देखता है। इसका आशय उस युग के प्रति आकर्षण और उसे आदर्श रूप में याद करना है। गद्यांश यह निश्चित नहीं करता कि वैदिक आर्य स्वयं उसे स्वर्णकाल कहते थे; यह बाद की दृष्टि से किया गया मूल्यांकन है।

चरण 3: निष्कर्ष वैदिक युग भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था। उसकी इसी स्वाभाविकता के कारण भारतीय मन आज भी उसकी ओर आकर्षित होता है और वह हमें स्वर्णकाल के समान प्रतीत होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का आधार स्वाभाविकता और उसके प्रति आकर्षण रखें; गद्यांश में न दिए गए आर्थिक या राजनीतिक दावे न जोड़ें।

2(ख). जाति-प्रथा एवं नारियों के विषय में बुद्ध के विचारों को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में जाति-प्रथा और नारियों से संबंधित दो अलग पक्ष पूछे गए हैं। उत्तर में दोनों को स्पष्ट रूप से अलग रखना चाहिए।
- गद्यांश के अनुसार बुद्ध जन्म के स्थान पर कर्म को श्रेष्ठता का आधार मानते थे और मोक्ष में नारियों का अधिकार स्वीकार करते थे।

चरण 1: जाति-प्रथा पर बुद्ध के विचार लिखिए बुद्ध जाति-प्रथा के विरोधी थे और उन्होंने ब्राह्मणों की जन्मगत श्रेष्ठता के विरुद्ध विद्रोह का प्रचार किया। उनके अनुसार मनुष्य का श्रेष्ठ या अधम होना उसके जन्म से तय नहीं होता; उसके कर्म इसका आधार होते हैं। इस प्रकार उन्होंने जन्म पर आधारित सामाजिक ऊँच-नीच को अस्वीकार किया।

चरण 2: नारियों के अधिकार स्पष्ट कीजिए बुद्ध ने नारियों को भिक्षुणी बनने का अधिकार दिया। इसके माध्यम से उन्होंने स्वीकार किया कि मोक्ष केवल पुरुषों के लिए नहीं है; नारियाँ भी उसकी अधिकारिणी हो सकती हैं। गद्यांश में यह उदाहरण आध्यात्मिक जीवन में स्त्रियों की पात्रता स्वीकार करने के प्रमाण के रूप में दिया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष बुद्ध जाति-प्रथा और जन्मगत श्रेष्ठता के विरोधी थे तथा कर्म को मनुष्य के मूल्यांकन का आधार मानते थे। उन्होंने नारियों

को भिक्षुणी बनने का अधिकार देकर उन्हें भी मोक्ष की अधिकारिणी माना।

त्वरित सुझाव: जाति संबंधी उत्तर में जन्म बनाम कर्म और नारी संबंधी उत्तर में भिक्षुणी तथा मोक्ष के अधिकार का उल्लेख अवश्य करें।

2(ग). बुद्ध की कौन-सी बात आधुनिकता के प्रसंग में ठीक नहीं बैठती ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न बुद्ध के विचारों में उस पक्ष को पहचानने का है जिसे लेखक आधुनिकता से बेमेल मानता है। इसे उनके सभी विचारों पर लागू नहीं करना चाहिए।
- निवृत्तिवाद का संदर्भ यहाँ गृहस्थ के कर्म की अपेक्षा संन्यास और भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ मानने से है।

चरण 1: बेमेल विचार की पहचान कीजिए लेखक स्पष्ट रूप से कहता है कि बुद्ध 'निवृत्तिवादी थे'। वे गृहस्थी के कर्म की तुलना में भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ समझते थे। आधुनिकता से असंगत कही गई बात उनकी यही संन्यास-प्रधान प्रवृत्ति है। जाति-विरोध और नारियों के अधिकार का समर्थन यहाँ आलोचना का विषय नहीं है।

चरण 2: लेखक का कारण समझाइए गद्यांश के अनुसार बुद्ध की प्रेरणा से अनेक ऐसे युवक संन्यासी हो गए जो उत्पादन बढ़ाकर समाज का भरण-पोषण कर सकते थे। लेखक की दृष्टि में समाज के उपयोगी कर्मों से हटना आधुनिक सक्रिय और उत्पादनशील जीवन से मेल नहीं खाता। इसलिए वह निवृत्तिवाद को आधुनिकता से बेमेल मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष बुद्ध का निवृत्तिवादी होना और गृहस्थी के कर्म से भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ मानना आधुनिकता के प्रसंग में ठीक नहीं बैठता। लेखक के अनुसार इससे उत्पादन और समाज के भरण-पोषण में योगदान देने योग्य युवक संन्यास की ओर चले गए।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में बेमेल बात पूछी गई है, इसलिए निवृत्तिवाद लिखें और उसका अर्थ गृहस्थ कर्म की अपेक्षा भिक्षु-धर्म की श्रेष्ठता से स्पष्ट करें।

2(घ). संन्यास की संस्था से समाज को क्या हानि पहुँचती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में गद्यांश के अनुसार संन्यास की संस्था के सामाजिक प्रभाव को समझाना है। लेखक ने इसे उत्पादन और भरण-पोषण से जोड़ा है।
- कारण और परिणाम का क्रम है: कर्म करने योग्य युवकों का संन्यास लेना, उत्पादक योगदान से हटना और समाज को उस योगदान से वंचित करना।

चरण 1: उत्पादक युवकों की भूमिका पहचानिए लेखक के अनुसार देश के हजारों-लाखों युवक उत्पादन बढ़ाकर समाज का भरण-पोषण करने योग्य थे। उनका श्रम समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने में उपयोगी हो सकता था। किंतु संन्यास की प्रेरणा से वे गृहस्थी और उससे जुड़े उत्पादक कर्मों के स्थान पर संन्यासी जीवन की ओर चले गए।

चरण 2: समाज की हानि स्पष्ट कीजिए इन युवकों के संन्यास लेने से समाज उनके संभावित श्रम और उत्पादन-वृद्धि के लाभ से वंचित हो गया। जिस शक्ति का उपयोग समाज के भरण-पोषण में होना चाहिए था, वह उससे अलग हो गई। इसी सामाजिक और आर्थिक हानि के आधार पर लेखक संन्यास की संस्था को समाज-विरोधिनी कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष संन्यास की संस्था से कर्म करने योग्य युवक उत्पादक जीवन से हट जाते हैं। फलतः समाज को उनके श्रम, उत्पादन-वृद्धि और भरण-पोषण में मिलने वाले योगदान का लाभ नहीं मिलता; यही हानि लेखक ने बताई है।

त्वरित सुझाव: हानि समझाते समय युवक, उत्पादक श्रम और सामाजिक भरण-पोषण को एक कारण-परिणाम शृंखला में जोड़िए।

2(ङ). उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार का संक्षिप्त परिचय देता है; वह किसी एक उदाहरण तक सीमित नहीं होना चाहिए।
- इस गद्यांश में बुद्ध के सामाजिक सुधारों की आधुनिकता से समानता और उनके निवृत्तिवाद की आधुनिकता से असंगति, दोनों का विवेचन हुआ है।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानिए गद्यांश वैदिक युग की चर्चा से आरंभ होता है, पर उसका मुख्य विस्तार बौद्ध युग के विचारों पर है। बुद्ध जन्म के स्थान पर कर्म को श्रेष्ठता का आधार मानते हैं, जाति-प्रथा का विरोध करते हैं और नारियों को मोक्ष का अधिकार देते हैं। लेखक इन विचारों की तुलना आधुनिकता से करता है।

चरण 2: शीर्षक की व्यापकता परखिए अंतिम भाग में भिक्षु-धर्म को गृहस्थी से श्रेष्ठ मानने की आलोचना की गई है। इसलिए केवल सामाजिक समानता अथवा केवल संन्यास की हानि पर केंद्रित शीर्षक अधूरा होगा। ऐसा शीर्षक चाहिए जो बुद्ध के विचारों और आधुनिकता के संबंध को समेटे, ताकि समानता और भिन्नता दोनों उसमें आ जाएँ।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: **बुद्ध के विचार और आधुनिकता**।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय गद्यांश के आरंभ, मुख्य विवेचन और अंतिम निष्कर्ष को एक साथ देखें; यहाँ केंद्रीय संबंध बुद्ध के विचारों और आधुनिकता का है।

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(क) लोकतंत्र में मीडिया का दायित्व

(ख) हमारे पड़ोसी देश

(ग) साम्प्रदायिक हिंसा प्रतिहिंसा की जननी है

(घ) सामाजिक सद्भाव में युवकों का योगदान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, क्रमबद्ध विचार-विस्तार और सार्थक उपसंहार होना चाहिए। तर्क तथा उदाहरण विषय से सीधे जुड़े हों।
- लगभग 200 शब्दों के निबंध में सीमित प्रमुख विचारों को छोटे अनुच्छेदों में विकसित करें। प्रत्येक वैकल्पिक विषय का स्वतंत्र नमूना नीचे दिया गया है।

चरण 1: प्रारूप और विषयों की रूपरेखा बनाइए शीर्षक के बाद भूमिका, मुख्य विवेचन और उपसंहार रखें। पहले विषय में सूचना, निगरानी और निष्पक्षता; दूसरे में पड़ोसी देशों से संबंध, सहयोग और समस्याएँ; तीसरे में हिंसा का प्रतिशोध में बदलना और उसके उपाय; चौथे में युवाओं की सेवा, संवाद और साझा गतिविधियाँ मुख्य बिंदु होंगे। परीक्षा में निर्देशानुसार किसी एक विषय का निबंध लिखना है।

चरण 2: विषय (क) का नमूना निबंध पढ़िए **लोकतंत्र में मीडिया का दायित्व**

लोकतंत्र में जनता की भागीदारी तभी सार्थक होती है जब उसे सही और पर्याप्त जानकारी मिले। समाचारपत्र, रेडियो और दूरदर्शन जनमत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए मीडिया का दायित्व केवल समाचार देना नहीं, नागरिकों को जागरूक बनाना भी है।

मीडिया को शासन की नीतियों, योजनाओं और निर्णयों की निष्पक्ष समीक्षा करनी चाहिए। भ्रष्टाचार, अन्याय तथा अधिकारों के उल्लंघन को उजागर करके वह सत्ता को उत्तरदायी बनाता है। साथ ही किसानों, मजदूरों, स्त्रियों और उपेक्षित वर्गों की समस्याएँ सामने लाना उसका सामाजिक कर्तव्य है। चुनावों में उम्मीदवारों और जनहित के मुद्दों की तथ्यपूर्ण जानकारी मतदाता को विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सहायता करती है।

इस प्रभावशाली भूमिका के साथ संयम भी आवश्यक है। समाचार प्रकाशित करने से पहले तथ्यों की पुष्टि होनी चाहिए। अफवाह, सांप्रदायिक उत्तेजना और सनसनी फैलाने वाली प्रस्तुति समाज को हानि पहुँचाती है। विज्ञापन अथवा किसी प्रभावशाली समूह के दबाव में सत्य को छिपाना पत्रकारिता की विश्वसनीयता नष्ट करता है। आलोचना तर्कपूर्ण हो और संबंधित पक्ष को अपना मत रखने का अवसर मिले।

स्वतंत्रता और जिम्मेदारी एक-दूसरे की पूरक हैं। जब मीडिया निर्भीकता, संवेदनशीलता और निष्पक्षता के साथ जनहित की रक्षा करता है, तब लोकतंत्र अधिक सजग, पारदर्शी और सशक्त बनता है।

चरण 3: विषय (ख) का नमूना निबंध पढ़िए **हमारे पड़ोसी देश**

कोई भी देश अपने पड़ोस से अलग रहकर सुखी और सुरक्षित नहीं बन सकता। भारत के आसपास पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका और मालदीव जैसे देश स्थित हैं। इनके साथ हमारे भौगोलिक संबंधों के अतिरिक्त ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध भी हैं। पड़ोस में शांति हमारे विकास के लिए आवश्यक है।

नेपाल और भूटान से पर्वतीय क्षेत्र, नदियाँ तथा सांस्कृतिक परंपराएँ हमें जोड़ती हैं। बांग्लादेश के साथ भाषा, साहित्य और साझा इतिहास के अनेक सूत्र मिलते हैं। श्रीलंका तथा म्यांमार से प्राचीन धार्मिक और व्यापारिक संपर्क रहे हैं। पड़ोसी देशों के साथ व्यापार, पर्यटन, शिक्षा और तकनीकी सहयोग बढ़ने से लोगों के जीवन में सुधार आ सकता है। प्राकृतिक आपदाओं के समय सहायता और अनुभवों का आदान-प्रदान भी उपयोगी है।

कुछ पड़ोसियों के साथ सीमा-विवाद, आतंकवाद और अविश्वास जैसी समस्याएँ संबंधों को प्रभावित करती हैं। उनका समाधान उग्र वक्तव्यों या शत्रुता से नहीं, संवाद, सतर्कता और समझौतों के सम्मान से होना चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा करते हुए शांतिपूर्ण सहअस्तित्व अपनाना विवेकपूर्ण नीति है।

पड़ोसी देशों की संप्रभुता और जनता की भावनाओं का आदर करना जरूरी है। साहित्य, खेल और विद्यार्थियों के आदान-प्रदान से आपसी समझ बढ़ सकती है। सहयोगपूर्ण पड़ोस समूचे क्षेत्र को शांति, समृद्धि और विकास की दिशा में आगे ले जाता है।

चरण 4: विषय (ग) का नमूना निबंध पढ़िए **साम्प्रदायिक हिंसा प्रतिहिंसा की जननी है**

धर्म मनुष्य को करुणा, संयम और सद्भाव की शिक्षा देता है। जब धार्मिक पहचान को घृणा और सत्ता का साधन बना दिया जाता है, तब साम्प्रदायिक हिंसा जन्म लेती है। ऐसी हिंसा केवल एक घटना नहीं रहती; वह बदले की भावना को जन्म देकर समाज में प्रतिहिंसा का अंतहीन चक्र चला देती है।

किसी समुदाय के व्यक्ति पर आक्रमण होने पर उत्तेजित लोग पूरे दूसरे समुदाय को दोषी मानने लगते हैं। अफवाहें इस अविश्वास को और बढ़ाती हैं। फिर निर्दोष लोग निशाना बनते हैं और नई पीड़ा नए प्रतिशोध को उकसाती है। घर, दुकानें और विद्यालय नष्ट होते हैं; रोजी-रोटी छिनती है तथा वर्षों पुराने पड़ोसी संबंध टूट जाते हैं। बच्चों के मन में बैठा भय भविष्य को भी प्रभावित करता है।

इस चक्र को रोकने के लिए अपराधी और समुदाय के बीच अंतर करना आवश्यक है। कानून को निष्पक्षता से काम करना चाहिए और पीड़ितों को सुरक्षा, सहायता तथा न्याय मिलना चाहिए। नागरिकों को अपुष्ट खबरें नहीं फैलानी चाहिए। धर्मगुरु, शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता मिलकर संवाद तथा विश्वास की पुनर्स्थापना कर सकते हैं।

प्रतिशोध किसी पीड़ित का दुख समाप्त नहीं करता, बल्कि नए पीड़ित पैदा करता है। न्याय, सहिष्णुता और मानवता का मार्ग अपनाकर ही हिंसा की विरासत को शांति के भविष्य में बदला जा सकता है।

चरण 5: विषय (घ) का नमूना निबंध पढ़िए **सामाजिक सद्भाव में युवकों का योगदान**

सामाजिक सद्भाव का अर्थ है विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों और क्षेत्रों के लोगों का परस्पर सम्मान के साथ रहना। विविधताओं से भरे भारत में यह भावना राष्ट्रीय एकता का आधार है। युवकों में ऊर्जा, उत्साह और नई सोच होती है; इसलिए सद्भाव की स्थापना में उनका योगदान विशेष महत्त्व रखता है।

युवक सबसे पहले अपने व्यवहार में समानता अपनाकर उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। विद्यालय, महाविद्यालय और कार्यस्थल पर जाति या धर्म के आधार पर भेदभाव का विरोध करना आवश्यक है। साझा खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और पर्व विभिन्न समूहों को निकट लाते हैं। दूसरों की भाषा, परंपरा और आस्था को समझने से पूर्वाग्रह घटते हैं।

सेवा-कार्य सद्भाव का प्रभावी माध्यम हैं। रक्तदान, साक्षरता अभियान, स्वच्छता तथा आपदा-राहत में मिलकर काम करने से मानवता का साझा संबंध मजबूत होता है। युवा अफवाहों की जाँच करें, उत्तेजक संदेश न फैलाएँ और विवाद की स्थिति में शांतिपूर्ण संवाद को प्रोत्साहित करें। कमजोर व्यक्तियों की सहायता तथा स्त्रियों के सम्मान की रक्षा भी सामाजिक सहयोग का अंग है।

केवल भाषण देने से सद्भाव नहीं बनता; दैनिक आचरण में धैर्य, संवेदनशीलता और सहयोग चाहिए। यदि युवा संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज को अपना परिवार समझें, तो अविश्वास की दूरियाँ घटेंगी। उनका संगठित और रचनात्मक प्रयास देश में शांतिपूर्ण, समतामूलक जीवन का आधार बन सकता है।

चरण 6: निष्कर्ष चारों नमूनों में विषयानुकूल शीर्षक, स्पष्ट भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और समाधानपरक उपसंहार है। परीक्षा में चुने हुए एक विषय पर लगभग 200 शब्दों का स्वतंत्र निबंध लिखें।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले चुने हुए विषय के लिए भूमिका, तीन मुख्य विचार और एक उपसंहार तय करें; दूसरे विषयों की सामग्री उसी निबंध में न मिलाएँ।

4. विदेश में रहने वाले अपने मित्र को सलाह दीजिए कि वह वहाँ भारतीयों के साथ अपनी मातृभाषा में ही वार्तालाप करे तथा अपने आहार-व्यवहार में पूरी तरह भारतीय बना रहे । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मित्र को लिखे जाने वाले अनौपचारिक पत्र में आत्मीय संबोधन, सहज भाषा और सद्भावपूर्ण सलाह होनी चाहिए। प्रेषक का पता, दिनांक, संबोधन, मुख्य विषय और आत्मीय समापन इसके आवश्यक अंग हैं।
- मातृभाषा तथा भारतीय आहार-व्यवहार के प्रति लगाव को सांस्कृतिक आत्मीयता के रूप में समझाएँ। अपनी पहचान बनाए रखने की सलाह सम्मानपूर्वक और व्यावहारिक उदाहरणों सहित दें।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विचार-क्रम तय कीजिए ऊपर अपना पता और दिनांक लिखें। मित्र की कुशलता पूछने के बाद विदेश में रहने वाले भारतीयों के साथ मातृभाषा में बातचीत का आग्रह करें। परिवार, साहित्य और त्योहारों से भाषा का संबंध स्पष्ट करें। इसके बाद घर का भारतीय भोजन, अतिथि-सत्कार, बड़ों का आदर तथा सहयोग जैसे व्यवहारों का उल्लेख करें। अंत में शुभकामना और उत्तर पाने की अपेक्षा रखें।

चरण 2: पूरा नमूना पत्र लिखिए 25, शांति नगर

नई दिल्ली

29 मार्च, 2008

प्रिय मित्र अमित,

सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विदेश में तुम्हारी पढ़ाई अच्छी चल रही है। नए वातावरण में ढलने के तुम्हारे अनुभव पढ़कर लगा कि तुम वहाँ का जीवन समझने का प्रयास कर रहे हो। इसी प्रसंग में तुम्हें एक आत्मीय सलाह देना चाहता हूँ।

वहाँ रहने वाले भारतीय मित्रों के साथ अपनी मातृभाषा में ही बातचीत किया करो। मातृभाषा हमारे मन के भाव सहजता से व्यक्त करती है और परिवार तथा संस्कृति से हमारा संबंध बनाए रखती है। भारतीय साथियों के साथ अपनी भाषा में चर्चा करने, साहित्य पढ़ने और त्योहार मनाने से घर से दूर होने का अकेलापन भी कम होगा। दूसरी भाषाएँ सीखना उपयोगी है, पर उससे अपनी भाषा के प्रति लगाव कम नहीं होना चाहिए।

अपने आहार-व्यवहार में भी भारतीयता बनाए रखो। घर में दाल, रोटी, चावल, सब्जी जैसे परिचित और संतुलित भारतीय भोजन बनाया करो। भारतीय मित्रों को साथ भोजन करने के लिए बुलाओ। अतिथि-सत्कार, बड़ों का आदर, छोटों के प्रति स्नेह और जरूरतमंदों की सहायता हमारी संस्कृति की सुंदर विशेषताएँ हैं। इन्हें दैनिक व्यवहार में अपनाओ। स्थानीय लोगों के रीति-रिवाजों का सम्मान करते हुए भी अपनी सांस्कृतिक पहचान को सहजता से सँजोया जा सकता है।

मुझे विश्वास है कि तुम अध्ययन में सफलता पाने के साथ अपने संस्कारों से भी जुड़े रहोगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखना और समय मिलने पर पत्र लिखना। घर में सब तुम्हें याद करते हैं।

तुम्हारा मित्र

रोहित

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में मित्र को भारतीयों के साथ मातृभाषा में बातचीत करने और भारतीय भोजन, संस्कार तथा आत्मीय व्यवहार बनाए रखने की स्पष्ट सलाह दी गई है।

त्वरित सुझाव: मित्र को सलाह देते समय आदेशात्मक भाषा से बचें; मातृभाषा और आहार-व्यवहार, प्रश्न की दोनों अपेक्षाएँ अलग अनुच्छेदों में स्पष्ट करें।

अथवा

4. आपके नगर/कस्बे का एक नवयुवक सैनिक देश की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गया है । एक वर्ष बीत जाने पर भी उसकी बेसहारा माँ को कोई सहायता नहीं मिली है । उसकी दयनीय दशा बताते हुए, तुरन्त राहत के लिए रक्षा मंत्री, रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली के नाम पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रक्षा मंत्री को लिखा गया यह पत्र औपचारिक अनुरोध-पत्र है। इसमें शहीद सैनिक की माँ की आर्थिक असहायता और तत्काल सहायता की आवश्यकता स्पष्ट करनी है।
- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद-पता, विषय, संबोधन, संक्षिप्त अनुच्छेद और विनम्र समापन आते हैं। भाषा संवेदनशील, शिष्ट और तथ्यपरक होनी चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप तय करें प्रेषक के रूप में नगर का एक जिम्मेदार निवासी पत्र लिख सकता है। प्राप्तकर्ता का पद रक्षा मंत्री और कार्यालय रक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली होगा। विषय में शहीद सैनिक की बेसहारा माँ को तत्काल सहायता देने का अनुरोध लिखें, जिससे पत्र का उद्देश्य पहली दृष्टि में स्पष्ट हो।

चरण 2: मुख्य विषयवस्तु की योजना बनाएँ पहले सैनिक के देशरक्षा में बलिदान का उल्लेख करें। फिर बताएँ कि एक वर्ष बाद भी माँ को सहायता नहीं मिली है और भोजन, उपचार तथा अन्य दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करना कठिन हो रहा है। अंत में तत्काल आर्थिक राहत और नियमानुसार देय सहायता की कार्यवाही शीघ्र पूरी कराने का निवेदन करें। किसी निश्चित राशि या ऐसी सरकारी योजना का दावा आवश्यक नहीं है जिसका विवरण प्रश्न में नहीं है।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र लिखें 24, शांति नगर
मेरठ, उत्तर प्रदेश
दिनांक: 29 मार्च, 2008
सेवा में,
माननीय रक्षा मंत्री
रक्षा मंत्रालय
नई दिल्ली

विषय: शहीद सैनिक की बेसहारा माँ को तत्काल सहायता देने के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे नगर का एक नवयुवक सैनिक देश की रक्षा करते हुए एक वर्ष पूर्व वीरगति को प्राप्त हो गया था। देश के लिए उसका बलिदान हम सभी के लिए गौरव का विषय है। किंतु अत्यंत दुःख की बात है कि उसकी बेसहारा माँ को अब तक कोई सहायता प्राप्त नहीं हुई है।

पुत्र के निधन से उनका सहारा छिन गया है। आय का पर्याप्त साधन न होने के कारण भोजन, दवाइयों और अन्य दैनिक आवश्यकताओं की व्यवस्था करना भी उनके लिए कठिन हो गया है। उनका जीवन अत्यंत अभाव में बीत रहा है। ऐसे में सहायता मिलने में हो रहा विलंब

उनकी पीड़ा को और बढ़ा रहा है।

अत: आपसे विनम्र अनुरोध है कि संबंधित अधिकारियों को उनकी स्थिति की तत्काल जाँच कर राहत पहुँचाने का निर्देश दें। उन्हें नियमानुसार देय आर्थिक सहायता तथा अन्य सुविधाएँ शीघ्र उपलब्ध कराई जाएँ और आवश्यक कागजी कार्यवाही पूरी कराने में भी मदद दी जाए। आपकी त्वरित कार्रवाई से इस असहाय माँ को सम्मानपूर्वक जीवन बिताने का सहारा मिल सकेगा।

धन्यवाद।

भवदीय

अजय कुमार

स्थानीय निवासी

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में शहीद की माँ की दयनीय दशा, सहायता में एक वर्ष का विलंब और तत्काल राहत का निवेदन औपचारिक तथा संवेदनशील भाषा में व्यक्त किया गया है।

त्वरित सुझाव: विषय-पंक्ति में सहायता का उद्देश्य लिखें और अंतिम अनुच्छेद में अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट करें; केवल संवेदना प्रकट करके पत्र समाप्त न करें।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'प्रिंट माध्यम' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट माध्यम का अर्थ मुद्रित माध्यम है, जिसमें सूचना और विचार छपे हुए शब्दों तथा चित्रों से पाठकों तक पहुँचते हैं।
- समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ मुद्रित जनसंचार के प्रमुख उदाहरण हैं।

चरण 1: माध्यम का आधार पहचानें यहाँ प्रिंट शब्द छपाई की प्रक्रिया को दर्शाता है। इस माध्यम की सामग्री कागज पर मुद्रित होती है और पाठक उसे पढ़कर सूचना ग्रहण करता है।

चरण 2: उदाहरण से अर्थ स्पष्ट करें समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें छपे हुए शब्दों तथा चित्रों के माध्यम से सामग्री प्रस्तुत करते हैं। पाठक इन्हें अपनी सुविधा के अनुसार पढ़ सकता है और बाद में फिर देख सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष छपे हुए शब्दों और चित्रों द्वारा सूचना, विचार तथा समाचार संप्रेषित करने वाले माध्यम को प्रिंट माध्यम कहते हैं; जैसे समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में छपे हुए शब्दों या चित्रों का उल्लेख करें और समाचार-पत्र जैसा एक स्पष्ट उदाहरण जोड़ें।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

स्तंभ-लेखन का क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्तंभ-लेखन पत्रकारिता की वह विधा है जिसमें किसी निश्चित स्तंभ के अंतर्गत नियमित रूप से विचारपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं।
- स्तंभकार की अपनी दृष्टि, विश्लेषण और अभिव्यक्ति-शैली इस लेखन की विशेष पहचान होती है।

चरण 1: नियमितता का अर्थ समझें समाचार-पत्र या पत्रिका में किसी निश्चित शीर्षक अथवा स्थान पर समय-समय पर प्रकाशित लेखों की शृंखला स्तंभ कहलाती है। लेखक प्राय: किसी विषय या घटनाक्रम पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

चरण 2: विधा की विशेषता पहचानें राजनीति, साहित्य, खेल या सामाजिक जीवन जैसे विषयों पर स्तंभ लिखे जा सकते हैं। इसमें केवल घटना की सूचना देने के बजाय लेखक का विश्लेषण और व्यक्तिगत मत भी महत्त्वपूर्ण होता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-पत्र या पत्रिका के निश्चित स्तंभ में नियमित रूप से किसी विषय पर लेखक के विचार एवं विश्लेषण प्रस्तुत करने को स्तंभ-लेखन कहते हैं।

त्वरित सुझाव: स्तंभ-लेखन की परिभाषा में नियमित प्रकाशन, निश्चित स्तंभ और लेखक का अपना दृष्टिकोण अवश्य शामिल करें।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

संपादकीय में लेखक का नाम क्यों नहीं दिया जाता ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर समाचार-पत्र की संस्थागत राय प्रस्तुत करता है।
- उसका विचार केवल लेखक का निजी मत नहीं माना जाता; वह पत्र की संपादकीय नीति से जुड़ा होता है।

चरण 1: संपादकीय का प्रतिनिधित्व पहचानें संपादकीय पाठकों के सामने किसी घटना या मुद्दे का विश्लेषण करते हुए समाचार-पत्र का पक्ष रखता है। इसे लिखने वाला व्यक्ति संपादक या संपादकीय विभाग का सदस्य हो सकता है।

चरण 2: नाम न देने का कारण स्पष्ट करें लेख किसी व्यक्ति की स्वतंत्र निजी टिप्पणी के रूप में प्रकाशित नहीं होता। उसकी वैचारिक जिम्मेदारी समाचार-पत्र की होती है, इसलिए उसे किसी एक लेखक के नाम से नहीं प्रस्तुत किया जाता।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय में लेखक का नाम इसलिए नहीं दिया जाता क्योंकि वह व्यक्तिगत राय के बजाय समाचार-पत्र की नीति और संस्थागत विचारों का प्रतिनिधित्व करता है।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय व्यक्तिगत मत और समाचार-पत्र की संस्थागत राय के अंतर को एक स्पष्ट वाक्य में लिखें।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

हिन्दी में प्रकाशित होने वाले किन्हीं चार राष्ट्रीय समाचार-पत्रों के नाम लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हिंदी समाचार-पत्र हिंदी भाषा में समाचार, विचार और सार्वजनिक महत्त्व की सामग्री प्रकाशित करते हैं।
- प्रश्न में राष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखने वाले चार समाचार-पत्रों के नाम माँगे गए हैं; पत्रिका या प्रसारण माध्यम का नाम नहीं लिखना है।

चरण 1: उपयुक्त प्रकाशन चुनें ऐसे दैनिक समाचार-पत्र चुनें जो हिंदी में प्रकाशित होते हों और व्यापक पाठक-वर्ग में पहचाने जाते हों। दैनिक जागरण और अमर उजाला इसके उपयुक्त उदाहरण हैं।

चरण 2: चार नामों की सूची पूरी करें नवभारत टाइम्स और हिंदुस्तान भी हिंदी के प्रमुख समाचार-पत्र हैं। इन्हें पहले दो नामों के साथ लिखने से माँगी गई चार अलग समाचार-पत्रों की सूची पूरी होती है।

चरण 3: निष्कर्ष हिंदी के चार प्रमुख राष्ट्रीय समाचार-पत्र हैं: दैनिक जागरण, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स और हिंदुस्तान।

त्वरित सुझाव: चार अलग हिंदी समाचार-पत्रों के नाम लिखें; किसी अंग्रेजी समाचार-पत्र, पत्रिका या समाचार चैनल को सूची में न जोड़ें।

5(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

अंशकालिक संवाददाता किसे कहा जाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संवाददाता घटनाओं से संबंधित समाचार एकत्र करके समाचार-संस्था तक पहुँचाता है।
- अंशकालिक संवाददाता संस्था के लिए पूर्णकालिक रूप से काम नहीं करता, बल्कि सीमित समय में संवाद-संकलन करता है।

चरण 1: कार्य की प्रकृति समझें अंशकालिक संवाददाता किसी क्षेत्र की घटनाओं और सूचनाओं को जुटाकर समाचार-पत्र या समाचार-संस्था को भेजता है। वह अपना पूरा कार्य-समय उसी संस्था को नहीं देता।

चरण 2: पारिश्रमिक का सामान्य आधार पहचानें उसे प्रायः भेजे गए समाचारों या उनके उपयोग के आधार पर पारिश्रमिक मिलता है। ऐसी व्यवस्था में काम करने वाले संवाददाता को स्ट्रिंगर भी कहा जाता है। मुख्य पहचान उसका अंशकालिक रूप से समाचार देना है।

चरण 3: निष्कर्ष जो संवाददाता किसी समाचार-संस्था के लिए पूर्णकालिक रूप से कार्य न करके अंशकालिक रूप से समाचार भेजता है और सामान्यतः काम के अनुसार पारिश्रमिक पाता है, उसे अंशकालिक संवाददाता या स्ट्रिंगर कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में पूर्णकालिक कर्मचारी न होना और समाचार भेजने का काम करना स्पष्ट करें; केवल कम वेतन पाना इसकी पहचान नहीं है।

---

6. 'कृषकों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति' विषय पर लगभग 150 शब्दों में एक फ़ीचर का आलेख तैयार कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक समस्या के मानवीय पक्ष को रोचक, संवेदनशील और विचारपूर्ण शैली में प्रस्तुत करता है। इसमें प्रभावी शीर्षक, आकर्षक आरंभ और विषय से जुड़ा सार्थक समापन होता है।
- कृषक आत्महत्या जैसे गंभीर विषय में आर्थिक दबाव, पारिवारिक प्रभाव और सहायता के उपायों को संयमित भाषा में रखना चाहिए। अप्रमाणित आँकड़ों तथा सनसनीखेज वर्णन से बचना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु तय कीजिए शीर्षक में अन्नदाता के संकट का संकेत दें और उसके नीचे लेखक का नाम लिखें। आरंभ में खेत तथा किसान की चिंता का चित्र उभारें। मध्य भाग में कर्ज, बढ़ती लागत, अनिश्चित मौसम और फसल का उचित मूल्य न मिलने जैसी परिस्थितियाँ जोड़ें। अंत में सहायता, संवाद और नीतिगत सुधारों की आवश्यकता व्यक्त करें। नीचे दिए मॉडल आलेख का मुख्य भाग लगभग 150 शब्दों में रखा गया है।

चरण 2: संपूर्ण मॉडल फ़ीचर लिखिए **अन्नदाता की आँखों में सूखते सपने**

लेखक: अमित कुमार

खेत की मेड़ पर खड़ा किसान बादलों को देखता है। उसकी आँखों में केवल बारिश की प्रतीक्षा नहीं, घर के चूल्हे और बच्चों की पढ़ाई की चिंता भी है। दूसरों की थाली भरने वाला अन्नदाता आज स्वयं असुरक्षा से घिरा है।

महँगे बीज, खाद और सिंचाई खेती की लागत बढ़ाते हैं। सूखा या असमय वर्षा महीनों का श्रम मिटा देते हैं। फसल अच्छी हो, तब भी उचित मूल्य की अनिश्चितता बनी रहती है। कर्ज का बोझ और सामाजिक दबाव संकट को गहरा कर सकते हैं। आत्महत्या की घटनाएँ इसी पीड़ा की ओर हमारा ध्यान खींचती हैं; इनके पीछे अनेक जटिल कारण हो सकते हैं।

किसान को सहानुभूति के साथ ठोस सहारा चाहिए। सस्ता ऋण, सुलभ बीमा, समय पर मुआवजा और न्यायपूर्ण बाजार आवश्यक हैं। परिवार तथा समुदाय का संवाद और मानसिक स्वास्थ्य सहायता भी महत्त्वपूर्ण हैं। किसान को अकेला छोड़कर समृद्ध भारत का सपना अधूरा रहेगा। उसकी मुस्कान ही हमारी समृद्धि की असली फसल है।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर किसान की चिंता से आरंभ होकर संकट के आर्थिक और मानवीय पक्ष सामने लाता है तथा व्यावहारिक

सहायता के आह्वान पर समाप्त होता है। संवेदना, विषयगत विस्तार और चित्रात्मक भाषा इसे फ़ीचर का रूप देते हैं।

त्वरित सुझाव: किसान की एक जीवंत परिस्थिति से आरंभ करें, फिर कारणों को जोड़कर सहायता के उपाय लिखें। आँकड़े गढ़ने या आत्महत्या का सनसनीखेज चित्रण करने के स्थान पर मानवीय संवेदना बनाए रखें।

अथवा

6. 'शहरों का दमघोंटू वातावरण' विषय पर लगभग 150 शब्दों में एक फ़ीचर का आलेख तैयार कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में किसी विषय की जानकारी के साथ उसके अनुभवात्मक और मानवीय पक्ष का चित्रण होता है। प्रभावी शीर्षक और दृश्यात्मक आरंभ पाठक को विषय से जोड़ते हैं।
- शहरों के दमघोंटू वातावरण पर लिखते समय प्रदूषण के स्रोत, दैनिक जीवन पर उसका असर और सुधार के व्यावहारिक उपाय परस्पर जुड़े होने चाहिए। भाषा रोचक हो, पर अप्रमाणित आँकड़े या काल्पनिक विशेषज्ञ कथन न हों।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना बनाइए शीर्षक शहर में स्वच्छ हवा की कमी की ओर ध्यान खींचे। लेखक के नाम के बाद यातायात, धुएँ और शोर का दृश्य प्रस्तुत करें। फिर वाहनों, कारखानों, निर्माण की धूल और घटती हरियाली को समस्या से जोड़ें। समापन में सार्वजनिक परिवहन, प्रदूषण नियंत्रण और नागरिक सहभागिता का संदेश दें। मॉडल फ़ीचर के मुख्य भाग को लगभग 150 शब्दों में प्रस्तुत करें; यह केवल सुझावों की सूची न होकर एक सुसंगत आलेख बने।

चरण 2: संपूर्ण मॉडल फ़ीचर प्रस्तुत कीजिए **शहर की साँसों पर धुएँ का पहरा**

लेखिका: नेहा शर्मा

सुबह की हवा में ताजगी खोजते हुए खिड़की खोलिए तो सामने धुएँ की परत दिखाई देती है। सड़क पर वाहनों की कतार है, कानों में हॉर्न का शोर और आँखों में जलन। चमकते शहर की यह तस्वीर विकास की कीमत पर सवाल उठाती है।

वाहनों और कारखानों का धुआँ, निर्माण स्थलों की उड़ती धूल तथा कूड़ा जलाने की आदत हवा को दूषित करते हैं। पेड़ों की जगह बढ़ता कंक्रीट राहत के रास्ते भी बंद करता है। बच्चे खुले में खेलने से वंचित होते हैं और बुजुर्ग स्वच्छ हवा के लिए तरसते हैं। रोजमर्रा की भागदौड़ में साफ साँस लेना भी कठिन अनुभव बनता जा रहा है।

समाधान केवल शिकायत नहीं, साझा जिम्मेदारी है। भरोसेमंद सार्वजनिक परिवहन, धूल पर नियंत्रण, कूड़े का उचित निस्तारण और प्रदूषण नियमों का पालन जरूरी है। नागरिक भी अनावश्यक वाहन प्रयोग घटाएँ और पेड़ों की रक्षा करें। शहर तभी रहने योग्य होगा, जब उसकी ऊँची इमारतों के बीच खुलकर साँस लेने की जगह भी बचेगी।

चरण 3: निष्कर्ष यह आलेख शहरी जीवन के परिचित दृश्य से समस्या उजागर करता है, उसके कारण और मानवीय प्रभाव बताता है तथा साझा प्रयास की आवश्यकता पर समाप्त होता है। शीर्षक, लेखकीय नाम और प्रवाहपूर्ण प्रस्तुति फ़ीचर के अनुरूप हैं।

त्वरित सुझाव: धुआँ, धूल और शोर का छोटा दृश्य बनाकर आरंभ करें। प्रत्येक कारण को नागरिक जीवन से जोड़ें और अंत में ऐसे उपाय दें जिनमें प्रशासन तथा नागरिक दोनों की भूमिका हो।

7(क). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ॥
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ ॥ [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और रचना का परिचय देकर पद के भाव तथा उसकी काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- तुलसीदास के लिए राम की भक्ति सबसे बड़ी पहचान है। जातिगत अभिमान और सामाजिक निंदा उनके भक्तिपूर्ण, स्वाभिमानी जीवन को विचलित नहीं करते।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत सवैया गोस्वामी तुलसीदास की रचना 'कवितावली' से लिया गया है। यह पाठ्यपुस्तक 'आरोह' में संकलित है। इसमें कवि जाति के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन करने वाले लोगों की संकीर्णता का विरोध करते हैं। अपनी जाति और जीवन-पद्धति को लेकर लगाए जाने वाले आक्षेपों के उत्तर में वे राम के प्रति समर्पण और लोकनिंदा से अपनी निर्भयता प्रकट करते हैं।

चरण 2: सामाजिक आक्षेपों के प्रति निर्भयता कवि कहते हैं कि कोई उन्हें धूर्त कहे, अवधूत अर्थात विरक्त साधु कहे, राजपूत कहे या जुलाहा कहे, उन्हें इसकी परवाह नहीं है। इन संबोधनों से उनके वास्तविक व्यक्तित्व और भक्ति में कोई परिवर्तन नहीं होता। उन्हें किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करना है; इसलिए उनके कारण किसी की जाति बिगड़ने की आशंका भी निरर्थक है। विवाह-संबंध का उल्लेख करके वे उन लोगों की चिंता पर व्यंग्य करते हैं जो जाति की कथित शुद्धता को सबसे अधिक महत्त्व देते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि उनका जीवन ऐसी जातिगत मान्यताओं पर निर्भर नहीं है।

चरण 3: रामभक्ति और संतोषपूर्ण जीवन तुलसीदास अपनी पहचान राम के प्रसिद्ध सेवक के रूप में देते हैं। उनकी प्रतिष्ठा का आधार किसी जाति का बड़प्पन नहीं, अपने आराध्य के प्रति समर्पण है। जिसे जो अच्छा लगे, वह उनके बारे में कहता रहे। वे माँगकर भोजन कर लेंगे और मस्जिद में सो रहेंगे। इस कथन में न्यूनतम आवश्यकताओं से संतुष्ट रहने तथा धार्मिक-सामाजिक संकीर्णताओं से ऊपर उठने की भावना है। उन्हें किसी से कुछ लेना-देना नहीं है और वे सांसारिक लेन-देन के बंधनों में नहीं पड़ना चाहते। यहाँ भिक्षा पर जीवन बिताने का उल्लेख स्वार्थपूर्ण संग्रह और दूसरों को प्रसन्न करके सुविधाएँ जुटाने से मुक्त जीवन को व्यक्त करता है।

चरण 4: काव्यगत विशेषताएँ पद की भाषा ब्रजभाषा है और कथन का स्वर निर्भीक तथा व्यंग्यपूर्ण है। 'कहौ' की आवृत्ति से लोकनिंदा के प्रति कवि की उपेक्षा प्रभावशाली बनती है। 'माँगि कै खैबो' और 'मसीत को सोइबो' जैसे लोकप्रचलित प्रयोग कथन को सहजता देते हैं। 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' में मुहावरेदार भाषा द्वारा सांसारिक लेन-देन से अनासक्ति व्यक्त हुई है। सवैया की लय और सीधे संबोधन से भक्त का आत्मविश्वास उभरता है।

चरण 5: निष्कर्ष इस पद में तुलसीदास ने रामभक्ति को अपनी सर्वोपरि पहचान बताते हुए जातिगत संकीर्णता, लोकनिंदा और सांसारिक निर्भरता का निषेध किया है। उनका आदर्श संतोष, अनासक्ति और निर्भय आत्मसम्मान से युक्त जीवन है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में पहले जातिसंबंधी आक्षेप, फिर राम की दासता और अंत में माँगकर खाने तथा मस्जिद में सोने से व्यक्त अनासक्ति समझाएँ।

7(ख). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया —
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया —
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'बादल राग' में बादल क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है। उसकी गर्जना शोषित जीवन में नई आशा और चेतना जगाती है।
- काव्यांश की व्याख्या में प्राकृतिक दृश्य के साथ उसके प्रतीकात्मक अर्थ को समझना आवश्यक है; सोए हुए अंकुर नए जीवन की संभावना प्रकट करते हैं।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'बादल राग' से लिया गया है, जो पाठ्यपुस्तक 'आरोह' में संकलित है। कवि बादलों को क्रांतिकारी शक्ति के रूप में देखते हैं। इस अंश में बादल के आगमन से उत्पन्न हलचल तथा धरती के भीतर सोए अंकुरों में जागने वाली नवजीवन की आशा का चित्रण है। इसके माध्यम से पीड़ित जन के जीवन में परिवर्तन की आकांक्षा व्यक्त हुई है।

चरण 2: वायुरूपी समुद्र पर क्रांति की नौका कवि बादल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि उसकी युद्ध-नौका वायुरूपी समुद्र पर तैर रही है। वह अनेक आकांक्षाओं से भरी हुई है। जैसे क्षणभंगुर सुख पर दुख की छाया मँडराती है, वैसे ही आकाश में बादलों का फैलाव दिखाई देता है। संसार का हृदय कष्टों से झुलसा हुआ है; उस पर बादल की छाया व्यापक क्रांति की शक्ति बनकर छा रही है। 'निर्दय विप्लव' परिवर्तन के उस प्रचंड रूप की ओर संकेत करता है जो अन्यायपूर्ण व्यवस्था को दृढ़ता से तोड़ता है। सुख की अस्थिरता और क्रांति की व्यापकता के चित्र साथ रखकर कवि आने वाले बड़े परिवर्तन का वातावरण बनाते हैं।

चरण 3: अंकुरों में नवजीवन की आशा बादल की गंभीर गर्जना युद्ध की भेरी के समान सुनाई देती है। उसे सुनकर पृथ्वी के हृदय में सोए हुए अंकुर सजग हो उठते हैं। वर्षा से जीवन मिलने की आशा में वे सिर उठाकर क्रांति के बादल की ओर देखने लगते हैं। प्राकृतिक स्तर पर यह वर्षा से बीजों में होने वाले अंकुरण का चित्र है। प्रतीकात्मक स्तर पर ये अंकुर दबे हुए, शोषित और साधनहीन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। परिवर्तन की पुकार उनमें चेतना और आशा जगाती है। बादल का प्रचंड रूप इस प्रकार पीड़ितों के लिए विनाश का नहीं, जीवन और मुक्ति की संभावना का संदेश लाता है।

चरण 4: काव्यगत विशेषताएँ 'समीर-सागर' में वायु को सागर और बादल को 'रण-तरी' अर्थात युद्ध-नौका के रूप में प्रस्तुत किया गया है। गर्जना को भेरी का स्वर मानने से श्रव्य बिंब सजीव होता है। पृथ्वी का हृदय बताने तथा अंकुरों के सजग होकर सिर उठाने में मानवीकरण है। 'सुख' और 'दुख' का विरोध जीवन की अनिश्चितता को उभारता है। खड़ी बोली, मुक्त छंद और ओजपूर्ण शब्दावली कविता के क्रांतिकारी भाव के अनुकूल हैं। बादल और अंकुर के प्रतीक प्रकृति को सामाजिक चेतना से जोड़ते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष इस काव्यांश में बादल क्रांति का अग्रदूत बनकर आता है। उसकी गर्जना सोए अंकुरों की तरह दबे हुए जनसमुदाय को जगाती है और उन्हें नए, आशापूर्ण जीवन की संभावना दिखाती है।

त्वरित सुझाव: 'रण-तरी', 'भेरी' और 'सुप्त अंकुर' का अर्थ बताते समय बादल को क्रांति तथा अंकुरों को जागते हुए शोषित जन से अवश्य जोड़ें।

7(ग). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ ! [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और कविता का परिचय देकर पंक्तियों का आशय तथा काव्य-सौंदर्य स्पष्ट किया जाता है।
- इस अंश में यौवन के उल्लास और प्रिय की स्मृति से उपजी वेदना का सह-अस्तित्व कवि के व्यक्तित्व को प्रकट करता है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत काव्यांश आरोह में संकलित हरिवंश राय बच्चन की कविता 'आत्म-परिचय' से लिया गया है। कवि अपने स्वभाव, जीवन-दृष्टि और अंतर्मन की अनुभूतियों का परिचय देता है। इन पंक्तियों में वह बताता है कि उसके बाहरी उल्लास के भीतर स्मृतियों से उपजा दुख भी छिपा है।

चरण 2: यौवन के उन्माद में अवसाद कवि कहता है कि वह अपने साथ यौवन का जोश, उत्साह और मस्ती लिए चलता है। उसका जीवन केवल निराशा से भरा नहीं है; उसमें उमंग और आवेग भी हैं। किंतु इसी उल्लास के भीतर दुख और विषाद भी मौजूद हैं। 'उन्मादों में अवसाद' कहकर कवि ने बताया है कि मन की अवस्थाएँ एकरेखीय नहीं होतीं। बाहर दिखाई देने वाला उत्साह व्यक्ति के समूचे आंतरिक जीवन को प्रकट नहीं करता।

चरण 3: स्मृति से उत्पन्न बाहरी हँसी और भीतरी रुदन किसी प्रिय की याद कवि के साथ बनी रहती है। उससे जुड़े सुखद अनुभव बाहर हँसी ला देते हैं, लेकिन उसी प्रिय के अभाव की पीड़ा भीतर रुलाती है। इसलिए हँसी और आँसू यहाँ अलग-अलग क्षणों की घटनाएँ मात्र नहीं, एक ही स्मृति के दो प्रभाव हैं। 'हाय' में कवि की व्यथा सहज रूप से व्यक्त हुई है। कवि उस स्मृति को अपने जीवन से अलग नहीं कर पाता; वह उसे निरंतर अपने साथ लिए फिरता है।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य सरल खड़ी बोली में कवि की निजी अनुभूति प्रभावशाली बनी है। 'उन्मादों में अवसाद' तथा बाहर हँसने और भीतर रोने के कथनों में विरोधाभास का सौंदर्य है; प्रत्यक्ष विरोध के पीछे मन की वास्तविक स्थिति छिपी है। 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति कथन को लय देती है और अनुभूति के निरंतर साथ बने रहने का बोध कराती है। 'मैं' के प्रयोग से आत्मकथन की शैली स्पष्ट होती है। उल्लास और करुणा का मेल इस अंश को मार्मिक बनाता है।

चरण 5: निष्कर्ष कवि के व्यक्तित्व में यौवन की मस्ती और प्रिय की स्मृति से उपजा अवसाद साथ-साथ हैं। उसकी बाहरी हँसी के भीतर छिपी पीड़ा ही इस काव्यांश का प्रमुख भाव है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में 'उन्माद-अवसाद' और 'बाहर-भीतर' के विरोध को प्रिय की स्मृति से जोड़ें; केवल शब्दार्थ लिखकर न रुकें।

8. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने ? [6 अंक]

8(क). काव्यांश के कथ्य के सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथ्य-सौंदर्य कविता के मूल विचार और उसके मानवीय महत्त्व में निहित होता है।
- इस अंश में चिड़िया की उड़ान के सहारे कविता की कल्पना और संवेदना की असीम पहुँच व्यक्त हुई है।

चरण 1: चिड़िया से कविता की उड़ान तक कवि ने चिड़िया की उड़ान को आधार बनाकर कविता की रचनात्मक शक्ति समझाई है। चिड़िया की उड़ान भौतिक है और उसकी अपनी सीमा है, जबकि कविता कल्पना के सहारे उन सीमाओं से आगे पहुँच सकती है। इसलिए चिड़िया कविता की उड़ान के पूरे अर्थ को नहीं जान सकती।

चरण 2: सीमाएँ मिटाती मानवीय संवेदना 'बाहर भीतर' और 'इस घर, उस घर' से स्पष्ट होता है कि कविता बाहरी जगत के साथ मनुष्य के अंतर्मन में भी प्रवेश करती है। वह अलग-अलग घरों और व्यक्तियों के अनुभवों को जोड़ती है। इस प्रकार कविता का सौंदर्य उसकी स्वतंत्र, व्यापक और सबको अपनाने वाली संवेदना में है। एक परिचित दृश्य से कवि ने अमूर्त रचनात्मक शक्ति का सहज बोध कराया है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का कथ्य-सौंदर्य कविता की असीम कल्पनाशक्ति, भीतर-बाहर तक उसकी पहुँच और मनुष्यों को जोड़ने की क्षमता के उद्घाटन में है।

त्वरित सुझाव: कथ्य बताते समय उड़ान की सीमा और असीमता का अंतर समझाएँ तथा 'बाहर भीतर' को मन और संसार से जोड़ें।

8(ख). इन पंक्तियों की भाषागत विशेषताओं की चर्चा कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषागत विशेषताएँ बताते समय भाषा के स्वरूप, शब्द-प्रयोग, लय और अलंकार के उदाहरण दिए जाते हैं।
- यहाँ बोलचाल की सहज भाषा कविता की व्यापक शक्ति को मूर्त और प्रभावपूर्ण बनाती है।

चरण 1: सरल भाषा और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति पंक्तियों की भाषा सरल, सहज और बोलचाल की खड़ी बोली है। 'चिड़िया', 'घर', 'पंख' और 'उड़ान' जैसे परिचित शब्दों से कल्पना की अमूर्त शक्ति स्पष्ट हुई है। 'कविता एक उड़ान है' में कविता पर उड़ान का आरोप होने से रूपक का सौंदर्य है। 'कविता के पंख' भी रचनात्मक कल्पना की शक्ति का मूर्त संकेत हैं।

चरण 2: पुनरावृत्ति, प्रश्न और मुक्त लय 'चिड़िया क्या जाने' की पुनरावृत्ति तथा 'कविता' और 'उड़ान' का बार-बार प्रयोग कथन को लय और बल देते हैं। प्रश्नात्मक शैली कविता की असीमता को उभारती है। 'बाहर भीतर' तथा 'इस घर, उस घर' जैसे युग्म भाषा को संक्षिप्त रखते हुए अर्थ का विस्तार करते हैं। पंक्तियाँ मुक्त छंद में हैं; छोटे-बड़े वाक्यखंड स्वाभाविक प्रवाह पैदा करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सहज खड़ी बोली, परिचित बिंब, रूपक, शब्दों की आवृत्ति, प्रश्नात्मक शैली और मुक्त छंद की लय इन पंक्तियों की प्रमुख भाषागत विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: हर भाषागत विशेषता के साथ इसी अंश का छोटा उदाहरण दें; केवल अलंकारों के नाम लिखने से उत्तर अधूरा रहेगा।

8(ग). 'कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने' पंक्ति के भावगत सौन्दर्य पर अपने विचार प्रकट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावगत सौंदर्य किसी पंक्ति में व्यक्त अनुभूति और विचार की प्रभावशीलता को कहते हैं।
- चिड़िया की भौतिक उड़ान और कविता की कल्पनात्मक उड़ान का अंतर इस पंक्ति का आधार है।

चरण 1: दो प्रकार की उड़ान का अंतर चिड़िया अपने पंखों से आकाश में उड़ती है। उसकी उड़ान शरीर और भौतिक संसार की सीमाओं में बँधी रहती है। कविता की उड़ान कवि की कल्पना और संवेदना की उड़ान है; वह भौतिक दूरी से सीमित नहीं होती। अतः चिड़िया का उड़ना कविता की समूची शक्ति को समझने के लिए पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: प्रश्न में छिपी कविता की व्यापकता 'भला चिड़िया क्या जाने' के प्रश्न में यह भाव निहित है कि कविता की पहुँच उससे कहीं आगे है। वह 'बाहर भीतर' तथा 'इस घर, उस घर' तक पहुँचकर मनुष्य के अनुभवों को जोड़ती है। परिचित पक्षी के सहारे अपरिमित कल्पना को व्यक्त करना इस पंक्ति का सौंदर्य है। यहाँ चिड़िया की निंदा नहीं, कविता की स्वतंत्र और व्यापक सृजनशक्ति का उद्घाटन किया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति का भाव-सौंदर्य कविता की सीमाहीन कल्पना और संवेदना को चिड़िया की सीमित उड़ान के माध्यम से प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करने में है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में चिड़िया की भौतिक उड़ान और कविता की कल्पनात्मक उड़ान का स्पष्ट अंतर दें, फिर भीतर-बाहर की पहुँच समझाएँ।

अथवा

8. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के ख़तरनाक किनारों तक —
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत । [6 अंक]

8(क). "जन्म ..... कपास" पंक्ति में कपास से बच्चों का क्या सम्बन्ध है ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में किसी वस्तु के गुण दूसरी वस्तु की विशेषता को प्रतीकात्मक ढंग से स्पष्ट कर सकते हैं।
- कपास के हल्केपन और कोमलता के गुणों के सहारे बच्चों की सहज स्फूर्ति और लचीलेपन का चित्र प्रस्तुत है।

चरण 1: कपास के गुण और बच्चे कपास हल्की, मुलायम और कोमल होती है। कवि बच्चों में भी स्वभाव की कोमलता तथा शरीर का हल्कापन और लचीलापन देखता है। 'जन्म से ही' कहने का आशय है कि ये गुण उनमें स्वाभाविक हैं; वे किसी अभ्यास से प्राप्त की गई कृत्रिम विशेषताएँ नहीं हैं।

चरण 2: काव्यांश के संदर्भ में संबंध इसी सहज हल्केपन और फुर्ती के कारण बच्चे पतंग उड़ाते समय उत्साह से दौड़ते और उछलते हैं।

आगे का 'डाल की तरह लचीले वेग' का वर्णन उनके शरीर की लोच को और स्पष्ट करता है। बच्चे सचमुच कपास लेकर पैदा नहीं होते; कपास उनके बाल-सुलभ हल्केपन और कोमलता का काव्यात्मक संकेत है। इससे उनकी उन्मुक्त गति का सजीव चित्र बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष कपास से बच्चों का संबंध उसके हल्केपन, कोमलता और मुलायमपन के गुणों के स्तर पर है। कवि ने इन्हीं गुणों से बच्चों की जन्मजात सहजता और फुर्ती व्यक्त की है।

त्वरित सुझाव: कपास को वास्तविक वस्तु मानकर अर्थ न करें; उसके हल्केपन और कोमलता को बच्चों के स्वभाव और गति से जोड़ें।

8(ख). "छतों को भी नरम बनाते हुए" — काव्य-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में अनुभूति की तीव्रता दिखाने के लिए वस्तु की वास्तविक अवस्था से भिन्न चित्र भी प्रस्तुत किया जाता है।
- इस पंक्ति में बच्चों के उत्साह और उनके शरीर की सहज लोच के कारण कठोर छतों की अनुभूति बदलती दिखाई देती है।

चरण 1: पतंग उड़ाने में तल्लीन बच्चे बच्चे पतंग उड़ाने के आनंद में इतने मग्न हैं कि बेसुध होकर छतों पर दौड़ते हैं। उनके भीतर उमंग, फुर्ती और रोमांच भरा है। इस तल्लीनता में उन्हें छतों की कठोरता और पैरों को होने वाले कष्ट का ध्यान नहीं रहता। उनके लिए दौड़ने और खेलने का सुख प्रमुख हो जाता है।

चरण 2: नरम बनाने का काव्यात्मक आशय छतें वास्तव में मुलायम नहीं हो जातीं। बच्चों के हल्के, लचीले शरीर और उत्साहपूर्ण दौड़ से ऐसा लगता है मानो कठोर छतें भी नरम पड़ गई हों। इस चित्र से बाल-मन की निर्भीक उमंग तथा शरीर की लोच व्यक्त होती है। आगे छतों के खतरनाक किनारों का उल्लेख बताता है कि यहाँ वास्तविक खतरे मिट जाने का दावा नहीं, बच्चों की आनंदमयी अनुभूति का चित्रण है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का भाव है कि पतंग उड़ाने में मग्न बच्चों का उत्साह और शारीरिक लोच छतों की कठोरता को उनके अनुभव में गौण बना देते हैं, मानो छतें नरम हो गई हों।

त्वरित सुझाव: 'नरम' का अर्थ छत की बनावट बदलना न लिखें; उसे बच्चों की तल्लीनता, फुर्ती और लचीलेपन से समझाएँ।

8(ग). छतों के ख़तरनाक किनारों से वे कैसे बच पाते हैं ? इस संदर्भ में "डाल की तरह लचीला वेग" कथन का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बच्चों के रोमांच, शरीर की सहज लय और लचीलेपन के माध्यम से उनकी गतिशीलता व्यक्त हुई है।
- उपमा में किसी समान गुण के आधार पर तुलना होती है। यहाँ बच्चों की लचकभरी गति की तुलना पेड़ की डाल से की गई है।

चरण 1: बचने के आधार को समझिए पतंग उड़ाते हुए बच्चे उत्साह में छतों के ख़तरनाक किनारों तक पहुँच जाते हैं। कविता के अनुसार उस समय उनके रोमांचित शरीर का संगीत उन्हें गिरने से बचाता है। इस संगीत का आशय शरीर की सहज लय, संतुलन और अंगों के परस्पर तालमेल से है। यह बाहर से सुनाई पड़ने वाली कोई धुन नहीं, बच्चों की स्फूर्ति का काव्यात्मक रूप है।

चरण 2: उपमा का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए डाल हवा के साथ झुकती और लचकती है; उसी प्रकार बच्चों का शरीर तेज़ गति में भी मुड़ने और सँभलने की क्षमता रखता है। 'डाल की तरह लचीला वेग' में इसी गति और लचक का सुंदर मेल है। डाल उपमान, बच्चों का वेग उपमेय तथा लचीलापन समान गुण है। 'की तरह' के प्रयोग से उपमा अलंकार और बच्चों की चंचल गति का सजीव बिंब बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों के शरीर की रोमांचभरी लय और सहज संतुलन उन्हें सँभालते हैं। डाल की उपमा उनकी गति के लचीलेपन,

स्फूर्ति तथा चंचलता को मूर्त बनाती है।

त्वरित सुझाव: पहले 'शरीर का संगीत' का भावार्थ लिखिए, फिर डाल और बच्चों की गति के साझा गुण लचीलेपन से उपमा समझाइए।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'सहर्ष स्वीकारा है' कविता किसको व क्यों स्वीकारने की प्रेरणा देती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुक्तिबोध की कविता जीवन के सुख-दुःख और निजी अनुभवों को आत्मीय संबंध से जोड़ती है।
- जीवन की समग्र स्वीकृति का अर्थ अनुकूल और प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों को अपना मानकर स्वीकार करना है।

चरण 1: स्वीकार्य जीवन-अनुभव पहचानिए कविता जीवन के सुख-दुःख, संघर्ष, अभाव, उपलब्धियों और व्यक्तित्व की विशेषताओं को सहर्ष स्वीकारने की प्रेरणा देती है। कवि अपनी गरीबी, गंभीर अनुभव, विचारों तथा अंतर्मन की दृढ़ता और संवेदनशीलता को अलग-अलग करके नहीं देखता। जो कुछ उसके जीवन और व्यक्तित्व का अंग बना है, वह उसकी आत्मीय संपदा है।

चरण 2: स्वीकार करने का कारण स्पष्ट कीजिए इन सब पर उस प्रिय आत्मीय सत्ता का प्रभाव है जिससे कवि गहराई से जुड़ा है। जीवन की कोई वस्तु उसके स्नेह और स्मृति से अछूती नहीं; इसलिए कठिन अनुभव भी कवि को प्रिय लगते हैं। कविता केवल सुख मिलने पर प्रसन्न रहने के स्थान पर दुःख और अभाव को भी अपने निर्माण का हिस्सा समझने की दृष्टि देती है। यह स्वीकृति आत्मीयता और जीवन के प्रति गहरे लगाव से उत्पन्न होती है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता समूचे जीवन के सुख-दुःख, अभाव और अनुभवों को आनंदपूर्वक स्वीकारने की प्रेरणा देती है, क्योंकि ये प्रिय की आत्मीयता से जुड़े होकर कवि के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'किसको' के लिए जीवन की अनुकूल-प्रतिकूल स्थितियाँ और 'क्यों' के लिए प्रिय का प्रभाव तथा व्यक्तित्व-निर्माण लिखिए।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' काव्यांश के आधार पर भ्रातृशोक में विह्वल राम की दशा को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रसंग में राम का मानवीय, संवेदनशील और भ्रातृवत्सल रूप प्रकट होता है।
- विलाप में भाई को खो देने का भय, उसके त्याग की स्मृति और अपने प्रति ग्लानि मिलकर करुण भाव उत्पन्न करते हैं।

चरण 1: राम की व्याकुलता प्रस्तुत कीजिए लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम धैर्य खो बैठते हैं। वे उन्हें हृदय से लगाकर अत्यंत दुखी होते हैं और उनके न जागने पर विलाप करते हैं। उन्हें स्मरण आता है कि लक्ष्मण ने उनके लिए माता-पिता और घर का सुख छोड़ा तथा वन के कष्ट सहे। जो भाई उनका थोड़ा-सा दुःख भी नहीं देख सकता था, उसका अब उत्तर न देना राम को असह्य लगता है।

चरण 2: शोक और ग्लानि का कारण समझिए राम को लगता है कि यदि वन में भाई से बिछुड़ने का ज्ञान होता तो वे पिता की आज्ञा मानकर वन न आते। उन्हें सुमित्रा को उत्तर देने की चिंता सताती है। वे अपने को पंखविहीन पक्षी जैसा असहाय अनुभव करते हैं। उनके लिए लक्ष्मण का स्थान कोई दूसरा नहीं ले सकता; इसलिए वीर योद्धा होते हुए भी वे साधारण मनुष्य की तरह शोक और विवशता से भर उठते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भ्रातृशोक में राम अत्यंत व्याकुल, असहाय और ग्लानिग्रस्त हैं। लक्ष्मण के त्याग की स्मृति तथा उन्हें खो देने की आशंका उनके गहरे भ्रातृप्रेम और मानवीय करुणा को प्रकट करती है।

त्वरित सुझाव: राम की दशा लिखते समय मूर्च्छित लक्ष्मण, उनके त्याग की स्मृति और सुमित्रा को उत्तर देने की चिंता से अपने कथन को जोड़िए।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'छोटा मेरा खेत' कविता में छोटे चौकोने खेत को 'काग़ज़ का पन्ना' क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी की कविता में खेती की प्रक्रिया के माध्यम से कविता की रचना समझाई गई है।
- काग़ज़ और खेत, भाव और बीज तथा रचना और फसल के संबंध मिलकर एक विस्तृत रूपक बनाते हैं।

चरण 1: खेत और पन्ने की समानता स्पष्ट कीजिए काग़ज़ का छोटा चौकोना पन्ना कवि के लिए सृजन की भूमि है। जैसे किसान सीमित खेत में बीज बोकर फसल उगाता है, वैसे ही कवि पन्ने पर अपने भावों और विचारों को शब्दों में उतारकर कविता रचता है। पन्ने की चौकोर आकृति खेत का दृश्य सामने लाती है और उस पर होने वाली रचना खेती की प्रक्रिया से जुड़ जाती है।

चरण 2: काव्य-सृजन के रूपक को समझिए कवि के मन में कोई भाव बीज की तरह जन्म लेता है। कल्पना और चिंतन के सहारे वह विकसित होकर शब्दों के रूप में अंकुरित होता है और कविता की फसल बनता है। साधारण खेत की फसल कटकर समाप्त हो सकती है, पर कविता का रस पाठकों को बार-बार आनंद देता है। इस प्रकार छोटा-सा पन्ना व्यापक और अक्षय साहित्यिक अनुभव उपजाने वाला खेत बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काग़ज़ के पन्ने को छोटा चौकोना खेत इसलिए कहा गया है कि उसी पर भावों के बीज, कल्पना और शब्दों के सहारे कविता की रसपूर्ण फसल बनते हैं।

त्वरित सुझाव: खेत-पन्ना, बीज-भाव और फसल-कविता के संबंध लिखकर बताइए कि सीमित पन्ने पर रचा साहित्य असीम आनंद कैसे देता है।

---

10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब-कुछ कोमल है । यह भूल है । इसके फल इतने मज़बूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते । जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं । वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं । मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार ज़माने का रुख़ नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं । [8 अंक]

10(i). शिरीष के फल कैसे व्यक्ति की कैसी प्रवृत्ति के प्रतीक हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक में किसी वस्तु के गुणों द्वारा मानव-जीवन की प्रवृत्ति व्यक्त होती है।
- गद्यांश पुराने शिरीष-फलों के स्थान न छोड़ने को पुराने नेताओं की पद से चिपके रहने की प्रवृत्ति से जोड़ता है।

चरण 1: फलों की विशेषता पहचानिए शिरीष के पुराने फल कठोर और मज़बूत हैं। नए फूल निकल आने तथा नए फल-पत्ते आ जाने पर भी वे अपना स्थान नहीं छोड़ते। वे तभी हटते हैं जब नई वृद्धि उन्हें धकियाकर बाहर करती है। इस विवरण में मुख्य बात उनकी कठोरता के साथ समय बीतने पर भी अपनी जगह पर जमे रहने का हठ है।

चरण 2: मानव-प्रवृत्ति से संबंध जोड़िए ये फल ऐसे जड़ और पदलोलुप नेताओं के प्रतीक हैं जो बदलते समय की माँग को नहीं समझते। नई पीढ़ी को अवसर देने के बजाय वे पुराने पद और अधिकार से चिपके रहते हैं। नई पीढ़ी के सामने आ जाने पर भी स्वेच्छा से पीछे हटने को तैयार न होना इसी प्रवृत्ति का रूप है। लेखक पुराने फलों के व्यवहार के माध्यम से ऐसे लोगों की हठधर्मिता पर व्यंग्य करता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के पुराने फल समय का रुख न पहचानने वाले पदलोलुप, जड़ और हठी नेताओं के प्रतीक हैं; वे नई पीढ़ी द्वारा हटाए जाने तक अपना स्थान नहीं छोड़ते।

त्वरित सुझाव: प्रतीक समझाते समय फल का 'स्थान न छोड़ना' और नेता का 'पद से चिपके रहना' साथ रखिए; यही उत्तर का मुख्य संबंध है।

10(ii). शिरीष के नए फल और पत्तों का पुराने फलों के प्रति व्यवहार संसार में किस रूप में देखने को मिलता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश प्रकृति के परिवर्तन को सामाजिक जीवन के पीढ़ीगत परिवर्तन से जोड़ता है।
- नए फल-पत्तों और पुराने फलों का संबंध नए लोगों तथा स्थान न छोड़ने वाले पुराने नेताओं का प्रतीक है।

चरण 1: प्राकृतिक व्यवहार स्पष्ट कीजिए शिरीष के पुराने फल नए फूलों के आने पर भी शाखाओं पर टिके रहते हैं। नए फल और पत्ते मिलकर उन्हें धकियाकर बाहर करते हैं। इस प्रकार पेड़ पर नई वृद्धि के लिए स्थान बनता है। पुराने फलों का स्वेच्छा से न हटना और नए फल-पत्तों का उन्हें हटाना, दोनों बातें लेखक की तुलना समझने के लिए आवश्यक हैं।

चरण 2: संसार में उसका रूप बताइए समाज में कुछ पुराने नेता बदलते समय को नहीं पहचानते और अपना पद छोड़ने को तैयार नहीं होते। तब नई पीढ़ी के लोग उन्हें हटाकर नेतृत्व सँभालते हैं। संसार में नए फल-पत्तों का व्यवहार इसी रूप में दिखाई देता है कि नए विचार और नई शक्तियाँ जड़ हो चुके नेतृत्व को विस्थापित करती हैं। लेखक यहाँ विशेष रूप से उन नेताओं की बात करता है जो अवसर देने के बजाय अधिकार पर जमे रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यह व्यवहार संसार में नई पीढ़ी द्वारा समय की माँग न समझने वाले पुराने नेताओं को हटाकर उनका स्थान लेने के रूप में दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों पक्षों का मेल कीजिए: नए फल-पत्ते नई पीढ़ी हैं और जमे हुए पुराने फल पद न छोड़ने वाले नेता हैं।

10(iii). वसन्त के आगमन पर प्रकृति में परिवर्तन पुराने फलों को क्या संकेत देता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वसंत प्रकृति में नवजीवन और विकास का समय है; नई पत्तियाँ तथा फूल इसी परिवर्तन के चिह्न हैं।
- गद्यांश में पुराने फलों का खड़खड़ाना बदलते परिवेश से उनका असंगत बने रहना दिखाता है।

चरण 1: वसंत का परिवर्तन पहचानिए वसंत के आगमन पर वनस्थली नए फूलों और पत्तों से भरकर मर्मरित होने लगती है। चारों ओर नई वृद्धि और सजीवता दिखाई देती है। इसके विपरीत शिरीष के पुराने फल कठोर होकर खड़खड़ाते रहते हैं। नए पुष्प-पत्रों की कोमल ध्वनि तथा पुराने फलों की कर्कश ध्वनि का अंतर नए समय और पुराने जड़ रूप के बीच विरोध प्रकट करता है।

चरण 2: पुराने फलों के लिए संदेश बताइए प्रकृति का यह नया रूप पुराने फलों को संकेत देता है कि उनका समय बीत चुका है। अब उन्हें अपना स्थान नई वृद्धि के लिए छोड़ देना चाहिए। यदि वे परिवर्तन को स्वीकार नहीं करते और शाखाओं पर जमे रहते हैं, तो नए फल-पत्ते उन्हें धकियाकर हटा देंगे। लेखक इसी प्राकृतिक संकेत से मनुष्य को भी समय के अनुसार अपनी भूमिका बदलने की सीख देता है।

चरण 3: निष्कर्ष वसंत का परिवर्तन पुराने फलों को बताता है कि उनका समय समाप्त हो गया है और अब उन्हें नए फल-पत्तों के लिए स्थान छोड़ देना चाहिए।

त्वरित सुझाव: वसंत की नई वृद्धि से 'नए को स्थान देने' का संकेत निकालिए; केवल मौसम बदलने की सूचना लिखने से भाव पूरा नहीं होगा।

10(iv). शिरीष के नए फलों-पत्तों और पुराने फलों को देखकर लेखक को किसकी याद आ जाती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में शिरीष के पुराने फल परिवर्तन का विरोध करने वाले लोगों के प्रतीक हैं।
- नए फल-पत्ते नई पीढ़ी का संकेत देते हैं; उनकी क्रिया से लेखक सामाजिक जीवन की समान स्थिति याद करता है।

चरण 1: प्रकृति का दृश्य समझिए शिरीष के पुराने फल इतने दृढ़ होते हैं कि नए फूल निकल आने पर भी डाल पर जमे रहते हैं। नए फल-पत्तों को उन्हें धकियाकर हटाना पड़ता है। इस प्रकार पुरानों का स्वयं स्थान न छोड़ना और नए का उन्हें हटाकर स्थान प्राप्त करना इस दृश्य की मुख्य बात है।

चरण 2: नेताओं से समानता पहचानिए यह दृश्य लेखक को उन नेताओं की याद दिलाता है जो बदलते समय का रुख नहीं पहचानते। वे अपनी उपयोगिता घटने पर भी पद या अधिकार से चिपके रहते हैं। जब तक नई पीढ़ी के लोग उन्हें धक्का देकर हटा नहीं देते, वे नई पीढ़ी के लिए स्वेच्छा से जगह खाली नहीं करते। गद्यांश का संकेत विशेष रूप से ऐसी जड़ मानसिकता वाले नेताओं की ओर है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक को समय का परिवर्तन न पहचानने वाले उन नेताओं की याद आती है, जो नई पीढ़ी द्वारा हटाए जाने तक अपने पद पर जमे रहते हैं।

त्वरित सुझाव: पुराने फल और पुराने नेताओं की समान क्रिया पर ध्यान दें: दोनों नई पीढ़ी के लिए स्वयं स्थान नहीं छोड़ते।

अथवा

10. एक होली का त्योहार छोड़ दें तो भारतीय परम्परा में व्यक्ति के अपने पर हँसने, स्वयं को जानते-बूझते हास्यास्पद बना डालने की परम्परा नहीं के बराबर है । गाँवों और लोक-संस्कृति में तब भी वह शायद हो, नगर-सभ्यता में तो वह थी ही नहीं । चैप्लिन का भारत में महत्त्व यह है कि वह 'अंग्रेज़ों जैसे' व्यक्तियों पर हँसने का अवसर देते हैं । चार्ली स्वयं पर सबसे ज़्यादा तब हँसता है जब वह स्वयं को गर्वोन्मत्त, आत्म-विश्वास से लबरेज़, सफलता, सभ्यता, संस्कृति तथा समृद्धि की प्रतिमूर्ति, दूसरों से ज़्यादा शक्तिशाली तथा श्रेष्ठ, अपने को 'वज्रादपि कठोराणि' अथवा 'मृदूनि कुसुमादपि' क्षण में दिखलाता है । [8 अंक]

10(i). होली का त्योहार किस रूप में क्या अवसर प्रदान करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में होली का महत्त्व अपने ऊपर हँस सकने की परंपरा के संदर्भ में पूछा गया है।
- आत्मपरिहास में व्यक्ति स्वयं को जानते-बूझते हास्यास्पद बनाता है और अपने ऊपर होने वाली हँसी में सहभागी होता है।

चरण 1: गद्यांश में होली का संदर्भ पहचानिए लेखक कहता है कि होली को छोड़कर भारतीय परंपरा में अपने पर हँसने की प्रवृत्ति नहीं के बराबर है। अतः यहाँ होली को आत्मपरिहास का अवसर देने वाले अपवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उत्तर का केंद्र त्योहार के अन्य सांस्कृतिक पक्ष नहीं, बल्कि यह विशेष हास्यभाव होना चाहिए।

चरण 2: अवसर का स्वरूप स्पष्ट कीजिए होली हास्य-विनोद और उल्लास के पर्व के रूप में व्यक्ति को स्वयं पर हँसने तथा जानते-बूझते अपनी हास्यास्पद स्थिति बना लेने का अवसर देती है। इसमें व्यक्ति केवल दूसरों का उपहास नहीं करता; वह अपने बारे में होने वाले हँसी-मज़ाक को भी सहजता से स्वीकार करता है। इसी कारण लेखक इसे अपने ऊपर हँस सकने की परंपरा से जोड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष होली हास्य-विनोद के पर्व के रूप में अपने ऊपर हँसने, स्वयं को जान-बूझकर हास्यास्पद बनाने और उस हँसी में शामिल होने का अवसर प्रदान करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल रंग और उत्सव न लिखें; गद्यांश के निर्णायक भाव, अपने ऊपर हँसने के अवसर, को स्पष्ट करें।

10(ii). अपने पर हँसने के संदर्भ में लोक-संस्कृति एवं नगर-सभ्यता में मूल अन्तर क्या था और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोक-संस्कृति और नगर-सभ्यता की तुलना आत्मपरिहास की स्वीकार्यता के आधार पर करनी है।
- लेखक का शब्द 'शायद' गाँवों में इस परंपरा की संभावना बताता है; उसे पूर्ण और सार्वभौम तथ्य न बनाएँ।

चरण 1: मूल अंतर बताइए गद्यांश के अनुसार गाँवों और लोक-संस्कृति में अपने ऊपर हँसने की परंपरा संभवत: कुछ सीमा तक मौजूद थी, जबकि नगर-सभ्यता में उसका लगभग अभाव था। इस अंतर का आशय दूसरों पर हँसने से नहीं, स्वयं को जानते-बूझते हास्यास्पद बना सकने और उसे सहजता से स्वीकार करने से है।

चरण 2: अंतर के कारण का आशय समझिए लोकजीवन की सहजता और अनौपचारिकता में अपने ऊपर हँसी स्वीकार करने की गुंजाइश रहती है। इसके विपरीत नगर-सभ्यता की सभ्य, सफल और श्रेष्ठ दिखाई देने की चेतना व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठित छवि से बाँध देती है। ऐसी छवि का आग्रह आत्मपरिहास में बाधा बनता है। यह कारण अंश में आए गर्व, सफलता, सभ्यता और श्रेष्ठता के उल्लेख से समझ में आता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोक-संस्कृति में सहजता के कारण आत्मपरिहास की कुछ संभावना थी; नगर-सभ्यता में प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता की छवि बनाए रखने के आग्रह से उसका अभाव था।

त्वरित सुझाव: तुलना में दोनों पक्ष लिखें और 'शायद' की सावधानी बनाए रखें; कारण को सहजता तथा प्रतिष्ठा के आग्रह से जोड़ें।

10(iii). 'अंग्रेज़ों जैसे व्यक्तियों' वाक्यांश में निहित व्यंग्यार्थ को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य में बाहरी प्रशंसा या विशेषण के भीतर किसी प्रवृत्ति की आलोचना छिपी होती है।
- यहाँ 'अंग्रेज़ों जैसे' का आशय अपने को सभ्यता, सफलता, समृद्धि और श्रेष्ठता का आदर्श मानने वाले व्यक्तियों से है।

चरण 1: वाक्यांश का संकेत पहचानिए इस वाक्यांश से ऐसे लोगों की ओर संकेत है जो स्वयं को दूसरों से अधिक सभ्य, संस्कृत, शक्तिशाली और सफल समझते हैं। गद्यांश के आगे दिए गए गर्वोन्मत्त होने तथा श्रेष्ठता के भाव से इसका आशय स्पष्ट होता है। इसलिए इसे केवल किसी राष्ट्रीयता या बाहरी वेशभूषा का उल्लेख समझना अधूरा होगा।

चरण 2: छिपे हुए व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए व्यंग्य इन व्यक्तियों के श्रेष्ठता-बोध और आत्ममुग्धता पर है। वे अपनी प्रतिष्ठित छवि को इतना महत्त्व देते हैं कि स्वयं को हास्यास्पद नहीं मान पाते। चार्ली इसी प्रकार की सभ्यता और सफलता की प्रतिमूर्ति बनकर अपनी ही हँसी उड़ाता है। उसके माध्यम से दर्शकों को उन आडंबरपूर्ण दावों और अहंकार पर हँसने का अवसर मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'अंग्रेज़ों जैसे व्यक्तियों' में उन अहंकारी लोगों पर व्यंग्य है जो स्वयं को सभ्यता, समृद्धि और श्रेष्ठता का आदर्श मानकर दूसरों से ऊँचा समझते हैं।

त्वरित सुझाव: व्यंग्यार्थ बताते समय व्यक्ति की पहचान से आगे बढ़कर आलोचित प्रवृत्ति लिखें: श्रेष्ठता का अहंकार और सभ्यता का आडंबर।

10(iv). चार्ली जिन दशाओं में अपने पर हँसता है, उन दशाओं में ऐसा करना अन्य व्यक्तियों के लिए सम्भव क्यों नहीं है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मपरिहास के लिए व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठित छवि से कुछ दूरी बनाकर स्वयं को देखना पड़ता है।

- चार्ली की विशेषता यह है कि वह अपनी सफलता, शक्ति और श्रेष्ठता के प्रदर्शन को भी हास्य का विषय बना लेता है।

चरण 1: चार्ली की दशाएँ पहचानिए चार्ली स्वयं पर सबसे अधिक तब हँसता है जब वह गर्व से भरा, अत्यधिक आत्मविश्वासी, सफल, सभ्य, समृद्ध और दूसरों से श्रेष्ठ दिखाई देता है। वह अपने कठोर या अत्यंत कोमल होने के प्रदर्शन को भी हँसी का विषय बना देता है। जिन रूपों से सामान्यतः प्रतिष्ठा का दावा किया जाता है, वही उसके आत्मपरिहास का आधार बनते हैं।

चरण 2: दूसरों की बाधा स्पष्ट कीजिए सामान्य व्यक्ति ऐसी दशाओं में अपने महत्त्व और श्रेष्ठता पर गर्व करता है। वह सफलता या सभ्यता की अपनी छवि से इतना जुड़ा रहता है कि स्वयं पर हँसना उसे अपनी प्रतिष्ठा घटाना लगता है। उसका अहंकार अपने आचरण को निष्पक्ष दृष्टि से देखने नहीं देता। चार्ली में स्वयं की हास्यास्पदता स्वीकार करने का साहस है, इसलिए वह यह कर पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अन्य व्यक्ति इन दशाओं में अहंकार और प्रतिष्ठा की रक्षा में बँध जाते हैं; वे अपनी श्रेष्ठ छवि को हास्यास्पद नहीं मान पाते, जबकि चार्ली निर्भीक होकर उसी पर हँसता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में चार्ली की दशाओं का संकेत देकर मुख्य कारण लिखें: अहंकार तथा प्रतिष्ठा खोने का भय आत्मपरिहास रोकते हैं।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

दो कन्याओं को जन्म देने के बाद भी भक्तिन पुत्र की इच्छा में अंधी अपनी जिठानियों की घृणा एवं उपेक्षा की पात्र बनी रही । इस प्रकार के उदाहरण भारतीय समाज में अभी भी देखने को मिलते हैं । इसका कारण और समाधान प्रस्तुत कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन के प्रसंग में पुत्र की चाह के कारण स्त्री और कन्या के प्रति होने वाला भेदभाव उजागर होता है।
- सामाजिक समस्या के उत्तर में कारण और समाधान दोनों देने चाहिए; व्यक्ति का सम्मान संतान के लिंग पर निर्भर नहीं है।

चरण 1: प्रसंग से समस्या पहचानिए भक्तिन को कन्याओं की माँ होने के कारण जिठानियों की घृणा और उपेक्षा झेलनी पड़ती है। इससे स्पष्ट होता है कि परिवार में स्त्री का मूल्यांकन उसके श्रम, गुण और मानवीय गरिमा के बजाय पुत्र को जन्म देने से किया जाता है। ऐसी सोच पुत्रियों और उनकी माँ, दोनों के प्रति अन्याय पैदा करती है।

चरण 2: भेदभाव के कारण समझाइए पितृसत्तात्मक मानसिकता पुत्र को वंश चलाने वाला, संपत्ति का उत्तराधिकारी तथा वृद्धावस्था का सहारा मानती है। दूसरी ओर दहेज और सामाजिक रूढ़ियों के कारण पुत्री को बोझ समझा जाता है। अशिक्षा तथा आर्थिक निर्भरता इस भेदभाव को बनाए रखती हैं। स्त्रियाँ भी इन मान्यताओं को स्वीकार करके दूसरी स्त्रियों को प्रताड़ित कर सकती हैं, जैसा भक्तिन की जिठानियों के व्यवहार में दिखाई देता है।

चरण 3: व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत कीजिए परिवार को पुत्र और पुत्री को समान स्नेह, पोषण, शिक्षा तथा आगे बढ़ने के अवसर देने चाहिए। लड़कियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता, संपत्ति में समान अधिकार और परिवार के निर्णयों में भागीदारी को बढ़ावा देना आवश्यक है। दहेज तथा लिंग के आधार पर भेदभाव का विरोध हो और बच्चों को आरंभ से समानता के संस्कार दिए जाएँ। संतान के लिंग के लिए माँ को दोषी ठहराने वाली अज्ञानपूर्ण धारणा को शिक्षा तथा जागरूकता से दूर करना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष पुत्र-मोह का मूल पितृसत्तात्मक सोच, दहेज जैसी रूढ़ियाँ और असमान अवसर हैं। शिक्षा, आर्थिक सशक्तीकरण तथा घर-समाज में वास्तविक लैंगिक समानता से इस अन्याय को दूर किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: पहले भक्तिन के साथ हुए भेदभाव को आधार बनाएँ; फिर पुत्र-मोह के कारण और उनसे सीधे जुड़े ठोस समाधान अलग-अलग लिखें।

11(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू उभरकर आया है ? क्या उनका आचरण आज के व्यक्ति के जीवन में तनाव को कम करने में सहायक हो सकता है ? 'बाज़ार दर्शन' के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भगत जी का चरित्र संयम, संतोष और अपनी आवश्यकताओं की स्पष्ट पहचान का उदाहरण है।
- बाज़ार का उपयोग आवश्यक वस्तु लेने के लिए करना और उसके आकर्षण से अनावश्यक इच्छाएँ न बढ़ाना मानसिक संतुलन का आधार है।

चरण 1: भगत जी के व्यवहार से उनका व्यक्तित्व समझें भगत जी चूरन बेचते हैं। चूरन खूब बिक सकता है, फिर भी वे प्रतिदिन छह आने की कमाई हो जाने पर बिक्री बंद कर देते हैं और बचा हुआ चूरन बच्चों को बाँट देते हैं। अधिक पैसा कमाने की संभावना उनके निश्चित संतोष को नहीं डिगाती। बाज़ार की चकाचौंध भी उन्हें अपनी ओर नहीं खींचती। उनका यह आचरण आत्मसंयम, लोभ से मुक्ति तथा उदारता का परिचायक है। वे अपनी जरूरत जानते हैं; इसलिए बाज़ार उनके मन पर अधिकार नहीं कर पाता।

चरण 2: उनके आचरण की आज के जीवन में उपयोगिता बताएँ आज व्यक्ति विज्ञापन, सामाजिक दिखावे और दूसरों की वस्तुओं से प्रभावित होकर अपनी आवश्यकताओं से अधिक खरीदना चाहता है। सीमित आय और असीम इच्छाओं का यह अंतर उसे ऋण, असंतोष और तनाव में डाल सकता है। भगत जी की तरह जरूरत पहचानने, आय के अनुसार खर्च करने और अनावश्यक तुलना छोड़ने से यह दबाव कम होगा। उनके जीवन से मिलने वाली सीख परिश्रम छोड़ना नहीं, कमाई और उपभोग पर विवेकपूर्ण नियंत्रण रखना है। संतोष के साथ दूसरों के सुख में भागीदारी भी मन को सहज बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष भगत जी का सबसे सशक्त पहलू उनका दृढ़ आत्मसंयम और संतोष है। आवश्यकताओं की पहचान, लोभ पर नियंत्रण और उदारता का उनका आचरण आज भी उपभोक्तावादी तनाव घटाने में सहायक हो सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले छह आने की कमाई और बच्चों को चूरन बाँटने का प्रसंग दें, फिर उसे संयम और आज के उपभोक्तावादी तनाव से जोड़ें।

11(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'गगरी फूटी बैल पियासा' इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है ? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर बताइए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकगीत में बैल की प्यास का उल्लेख ग्रामीण जीवन की वर्षा पर निर्भरता और पशुओं के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।
- बैल कृषि का महत्त्वपूर्ण सहयोगी है; उसके जीवन का संकट किसान की जीविका और पूरे समाज के अन्न उत्पादन से जुड़ता है।

चरण 1: सूखे के प्रसंग में गीत का आशय समझें 'काले मेघा पानी दे' में वर्षा न होने से धरती तप रही है और मनुष्य तथा पशु पानी के लिए व्याकुल हैं। इंदर सेना वर्षा की प्रार्थना करते हुए खेलगीत गाती है। 'गगरी फूटी बैल पियासा' में फूटी गगरी जल न मिल पाने की असहायता को उभारती है। यहाँ बैल की प्यास केवल एक पशु की परेशानी नहीं, सूखे से पीड़ित ग्रामीण जीवन की करुण स्थिति को सामने लाती है। मनुष्य अपनी आवश्यकता कह सकता है, पर मूक पशु की पीड़ा को मनुष्य को ही समझना और व्यक्त करना पड़ता है।

चरण 2: बैल और किसान के जीवन का संबंध स्पष्ट करें परंपरागत कृषि में बैल खेत जोतता है और किसान के श्रम में प्रमुख सहयोग देता है। किसान की अन्न-उत्पत्ति और जीविका उसके स्वस्थ रहने पर निर्भर करती है। पानी तथा चारे के अभाव में बैल दुर्बल होगा तो खेती का काम भी संकट में पड़ेगा। इसीलिए गीत में उसकी प्यास को विशेष रूप से स्वर दिया गया है। मेघों से पानी माँगना बैलों, खेतों और गाँव के जीवन की रक्षा की सामूहिक प्रार्थना बन जाता है। इससे मनुष्य और पशु की परस्पर निर्भरता तथा ग्रामीण समाज की करुणा दोनों प्रकट होती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बैल किसान का आवश्यक कृषि-सहयोगी है। उसका प्यासा रहना पशु-पीड़ा के साथ खेती और जीविका का संकट भी है; इसलिए इंदर सेना के गीत में उसकी प्यास मुखर होकर वर्षा की तीव्र आवश्यकता व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: बैल की प्यास को केवल दया का प्रसंग न बनाएँ; उत्तर में बैल, खेती, अन्न और किसान की जीविका के संबंध को स्पष्ट करें।

11(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'पहलवान की ढोलक' कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन की जीवन-यात्रा संघर्ष, प्रतिष्ठा, आश्रय छिनने और महामारी की त्रासदी के क्रम से बनती है।
- ढोलक की ताल उसके लिए कुश्ती की प्रेरणा और विपत्ति में साहस बनाए रखने का साधन है।

चरण 1: बचपन के संघर्ष से राज-पहलवान बनने तक के मोड़ देखें बचपन में माता-पिता की मृत्यु के बाद लुट्टन का पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया। सास को परेशान करने वालों से मुकाबला करने की इच्छा ने उसे शरीर मजबूत बनाने की ओर प्रेरित किया। श्यामनगर के मेले में उसने चुनौती स्वीकार कर प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को पराजित किया। इस विजय में ढोलक की ताल ने उसका उत्साह बढ़ाया। राजा ने उसकी प्रतिभा से प्रसन्न होकर उसे राज-पहलवान बनाया। इस तरह साधारण ग्रामीण युवक को सम्मान, संरक्षण और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

चरण 2: राजाश्रय समाप्त होने के बाद आए परिवर्तन बताएँ पुराने राजा की मृत्यु के बाद नए राजकुमार की रुचि और व्यवस्था बदल गई। लुट्टन तथा उसके दोनों बेटों का दरबारी संरक्षण समाप्त हो गया और वे गाँव लौट आए। लुट्टन ने वहाँ गाँव के लड़कों को कुश्ती सिखाने का प्रयास किया, पर गरीबी और पर्याप्त भोजन के अभाव में यह व्यवस्था टिक नहीं सकी। अब सम्मानित दरबारी जीवन के स्थान पर अभाव और अनिश्चित जीविका उसके हिस्से में आए।

चरण 3: महामारी और अंतिम त्रासदी का उल्लेख करें गाँव में अनावृष्टि, अन्न-संकट और महामारी ने जीवन को भय और मृत्यु से भर दिया। इस अँधेरे में लुट्टन की ढोलक लोगों को रात भर हिम्मत देती रही। उसके दोनों बेटे भी महामारी में मर गए, फिर भी उसने दुख के बीच ढोलक बजाकर साहस बनाए रखा। अंततः लुट्टन की भी मृत्यु हो गई और ढोलक की आवाज बंद हो गई। उसकी मृत्यु के साथ गाँव का वह सहारा भी समाप्त हुआ जो भय के बीच जीने का संबल देता था।

चरण 4: निष्कर्ष अनाथ बचपन, मेले की विजय, राज-पहलवान की प्रतिष्ठा, राजाश्रय का अंत और महामारी में पुत्रों सहित परिवार का विनाश लुट्टन के जीवन के प्रमुख मोड़ हैं। इन परिवर्तनों के बीच ढोलक उसके संघर्ष और अदम्य साहस की संगिनी रही।

त्वरित सुझाव: जीवन के मोड़ों को कालक्रम में लिखें और हर घटना के साथ उससे आया परिवर्तन बताएँ; केवल कहानी का सार लिखकर न रुकें।

11(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

नमक ले जाने के बारे में सफ़िया के मन में उठे द्वंद्व के आधार पर उसकी चारित्रिक विशेषताओं को 'नमक' पाठ के आलोक में उजागर कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सफ़िया के मन का द्वंद्व कानूनी प्रतिबंध और आत्मीय वचन निभाने की इच्छा के बीच उत्पन्न होता है।
- नमक यहाँ केवल वस्तु नहीं, जन्मभूमि की स्मृति और विभाजन के पार बने मानवीय संबंधों का प्रतीक है।

चरण 1: नमक ले जाने से संबंधित द्वंद्व स्पष्ट करें सिख बीबी ने सफ़िया से लाहौरी नमक लाने को कहा था। उस इच्छा में लाहौर के प्रति

उनका गहरा अपनापन था। सफ़िया इस भावनात्मक आग्रह को पूरा करना चाहती थी, पर उसे पता चला कि सीमा पार नमक ले जाना नियम के विरुद्ध है। इसलिए उसके सामने प्रश्न था कि वह नमक छोड़ दे, छिपाकर ले जाए अथवा अधिकारियों को साफ-साफ बताए। वचन और कानून के बीच यह खींचतान साधारण वस्तु को आत्मीयता की कठिन परीक्षा बना देती है।

चरण 2: उसके निर्णय से उभरते गुण पहचानें सफ़िया सिख बीबी के लगाव को समझती है; इससे उसकी संवेदनशीलता और सहृदयता प्रकट होती है। वह उनकी छोटी-सी इच्छा को मामूली मानकर टाल नहीं देती, इसलिए उसमें वचन निभाने की दृढ़ता और संबंधों के प्रति निष्ठा भी है। छिपाकर नमक ले जाने का विचार उसके मन में आता है, लेकिन उसे चोरी की तरह ले जाना उस आत्मीय भेंट का अपमान लगता है। वह कस्टम अधिकारियों को नमक और उसके पीछे की भावना बताने का साहस करती है। यह व्यवहार उसकी ईमानदारी, स्पष्टवादिता और आत्मसम्मान को उजागर करता है।

चरण 3: उसके मानवीय दृष्टिकोण को पाठ से जोड़ें सफ़िया धर्म और राष्ट्रीय सीमा से ऊपर मनुष्य की स्मृतियों और प्रेम को महत्त्व देती है। सिख बीबी के लिए नमक लाने का उसका प्रयास विभाजन से टूटे संबंधों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। दूसरों की अनुभूति को समझने की उसकी क्षमता ही उसे नियम की बाधा के सामने भी आत्मीयता के पक्ष में खड़ा करती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस द्वंद्व में सफ़िया संवेदनशील, वचननिष्ठ, साहसी, स्पष्टवादी और आत्मसम्मानी दिखाई देती है। उसका व्यवहार बताता है कि मानवीय प्रेम और साझा स्मृतियाँ राजनीतिक विभाजन के बाद भी जीवित रहती हैं।

त्वरित सुझाव: हर चारित्रिक गुण को प्रसंग से जोड़ें: बीबी की इच्छा समझना संवेदनशीलता है और अधिकारियों को सच बताना ईमानदारी तथा साहस है।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

क्या पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है ? तर्क-सहित उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी की मूल संवेदना बदलते पारिवारिक मूल्यों, पीढ़ियों के अंतराल और यशोधर बाबू के अकेलेपन से जुड़ी है।
- पाश्चात्य प्रभाव कहानी में परिवर्तन का एक रूप है; उसके आधार पर पूरे पारिवारिक संघर्ष को समझना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: पाश्चात्य प्रभाव के प्रत्यक्ष रूप पहचानें कहानी में यशोधर बाबू के बच्चे माता-पिता की शादी की पच्चीसवीं वर्षगाँठ को 'सिल्वर वैडिंग' के रूप में मनाते हैं। समारोह, उपहार और नई जीवनशैली उनके आधुनिक सोच-विचार को दिखाते हैं। दूसरी ओर यशोधर बाबू सादगी, पुराने संस्कार और किशनदा से मिले जीवन-मूल्यों से जुड़े हैं। इस प्रकार पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव कथा में मौजूद है और पुरानी पीढ़ी के लिए असहजता उत्पन्न करता है।

चरण 2: बाहरी प्रभाव के पीछे की मूल संवेदना समझें कहानी का केंद्र केवल उत्सव मनाने की विदेशी रीति नहीं है। यशोधर बाबू अपने ही परिवार में विचारों और अनुभवों की दृष्टि से अलग पड़ते जाते हैं। बच्चों के जीवन को देखने का उनका तरीका पुरानी मान्यताओं से संचालित होता है, जबकि परिवार बदलते समय को स्वीकार कर चुका है। बच्चों की भौतिक सफलता और सुविधाएँ भी पिता के मन की आत्मीयता की आवश्यकता पूरी नहीं कर पातीं। बेटे के दिए गाउन के प्रसंग में भी यशोधर बाबू को साथ और स्नेह की कमी महसूस होती है। यहाँ पीढ़ियों के बीच संवाद तथा भावनात्मक समझ का अभाव अधिक महत्त्वपूर्ण है।

चरण 3: तर्कपूर्ण मत प्रस्तुत करें पाश्चात्य प्रभाव को पूरी मूल संवेदना मानने से कहानी का मनोवैज्ञानिक और पारिवारिक पक्ष छोटा हो जाएगा। यह प्रभाव पीढ़ियों के अंतर को उभारता है, पर संघर्ष का संबंध पुराने मूल्यों के प्रति आग्रह, नए जीवन की आकांक्षा और परस्पर संवेदना की कमी से भी है। इसलिए उसे प्रमुख पृष्ठभूमि या परिवर्तन के कारणों में से एक मानना अधिक उचित है।

चरण 4: निष्कर्ष पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव कहानी में उपस्थित है, किंतु वही उसकी संपूर्ण मूल संवेदना नहीं है। मूल संवेदना पीढ़ियों के अंतराल, पारिवारिक संबंधों के बदलने और अपने ही घर में यशोधर बाबू के भावनात्मक अकेलेपन में निहित है।

त्वरित सुझाव: 'सिल्वर वैडिंग' के उत्सव को बाहरी परिवर्तन और यशोधर बाबू के अकेलेपन को भीतरी समस्या मानकर दोनों के संबंध पर तर्क दें।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं का उल्लेख करें जिन्होंने कविताओं के प्रति 'जूझ' पाठ के लेखक के मन में रुचि जगाई ।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्री सौंदलगेकर का अध्यापन कविता के अर्थ के साथ उसकी लय, भाव और सृजन की प्रक्रिया का अनुभव कराता था।
- शिक्षक का उत्साह, आत्मीय व्यवहार और प्रोत्साहन विद्यार्थी की छिपी रचनात्मक क्षमता को विकसित कर सकता है।

चरण 1: कविता का सजीव और रसपूर्ण पाठ सौंदलगेकर कविता को केवल समझाते नहीं थे, बल्कि पूरे भाव और तन्मयता से गाकर पढ़ाते थे। उनका मधुर स्वर, उपयुक्त लय और भावानुकूल अभिनय कविता को सजीव बना देते थे। उन्हें मराठी तथा अंग्रेज़ी की अनेक कविताएँ याद थीं। प्रसंग के अनुसार वे दूसरी कविताएँ भी सुनाते थे। इस प्रकार लेखक को कविता में निहित आनंद और संगीत का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ तथा वह भी उसी ढंग से कविताएँ गुनगुनाने लगा।

चरण 2: कवियों से परिचय और सृजन का प्रोत्साहन वे स्वयं भी कविताएँ लिखते थे और अपने परिचित कवियों की चर्चा करते थे। इससे लेखक को लगा कि कवि भी साधारण मनुष्य होते हैं; वह स्वयं भी अपने अनुभवों को कविता का रूप दे सकता है। सौंदलगेकर उसकी रचनाएँ ध्यान से सुनते, उनकी सराहना करते और आवश्यक सुधार बताते थे। उनके आत्मीय मार्गदर्शन ने लेखक की झिझक दूर की तथा कविता लिखने के लिए उसका आत्मविश्वास बढ़ाया। खेतों में काम करते हुए भी वह कविता के शब्दों और लय पर विचार करने लगा।

चरण 3: निष्कर्ष सौंदलगेकर के भावपूर्ण गायन, व्यापक काव्यज्ञान, कवियों के आत्मीय परिचय और रचनात्मक प्रोत्साहन ने लेखक को कविता का रसिक तथा स्वयं कविता रचने का इच्छुक बनाया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कविता पढ़ाने की शैली और लेखक को स्वयं कविता लिखने की प्रेरणा, दोनों को उदाहरण सहित जोड़ें।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पुरातत्त्व के कौन-से चिह्न ऐसे हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि "सिंधु सभ्यता ताक़त से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी ?"

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक अवशेषों से सभ्यता की जीवनव्यवस्था तथा उसकी सामाजिक प्राथमिकताओं का अनुमान लगाया जाता है।
- नागरिक सुविधाओं पर बल और राजसत्ता के भव्य प्रदर्शन का अभाव समझ पर आधारित अनुशासन की ओर संकेत करते हैं।

चरण 1: ताक़त के प्रदर्शन का अभाव सिंधु सभ्यता के अवशेषों में विशाल राजमहलों, भव्य मंदिरों या राजाओं की महिमा का प्रदर्शन करने वाले स्मारकों का वैसा प्रभुत्व नहीं मिलता जैसा कई अन्य प्राचीन सभ्यताओं में दिखाई देता है। मिले हुए औज़ारों और वस्तुओं में हथियारों की अपेक्षाकृत कम उपस्थिति भी ध्यान देने योग्य है। इससे लेखक को लगता है कि वहाँ का जीवन मुख्यतः युद्ध, सैन्य वैभव और सत्ता के आतंक के चारों ओर संगठित नहीं था। यह निष्कर्ष अवशेषों के स्वरूप पर आधारित है, केवल शासकों के नाम न मिलने पर नहीं।

चरण 2: सुव्यवस्थित नागरिक जीवन के प्रमाण नियोजित सड़कें और गलियाँ, पकी ईंटों के व्यवस्थित मकान, जलनिकासी की ढकी नालियाँ, कुएँ और स्नान की सुविधाएँ नागरिक आवश्यकताओं के प्रति गहरी समझ प्रकट करती हैं। विशाल स्नानागार जैसे सार्वजनिक निर्माण सामूहिक जीवन को दिया गया महत्त्व बताते हैं। इस व्यवस्था में स्वच्छता, उपयोगिता और परस्पर सहयोग की चिंता दिखाई देती है। लोगों के दैनिक जीवन को सुविधाजनक बनाने वाला यह नियोजन सामाजिक अनुशासन और नागरिक चेतना का प्रमाण बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष राजकीय या सैनिक वैभव की अपेक्षा सुनियोजित नगरों, स्वच्छता और सार्वजनिक सुविधाओं का महत्त्व सिद्ध करता है कि सिंधु सभ्यता में समझ से अनुशासित नागरिक जीवन की प्रधानता थी।

त्वरित सुझाव: पहले सत्ता और युद्ध के प्रदर्शन का अभाव लिखें, फिर नालियों, कुओं और नगर-योजना के सकारात्मक प्रमाण दें।

12(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर बताइए कि ऐन की डायरी उसके सुख-दुख का भावनात्मक दस्तावेज़ भी है । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी निजी अनुभवों, इच्छाओं और भावनाओं को आत्मीय ढंग से व्यक्त करने का माध्यम है।
- ऐन की डायरी में युद्ध के बाहरी संकट के साथ किशोर मन की भीतरी हलचल भी दर्ज है।

चरण 1: दुख, अकेलापन और घुटन की अभिव्यक्ति ऐन अपनी डायरी को किट्टी नाम देकर एक अंतरंग सखी की तरह संबोधित करती है। छिपकर रहने के कारण उसे स्वतंत्र रूप से बाहर घूमने, मित्रों से मिलने और सामान्य जीवन जीने का अवसर नहीं मिलता। पकड़े जाने का भय, युद्ध की अनिश्चितता और बंद वातावरण उसके मन में दुख तथा बेचैनी पैदा करते हैं। परिवार के लोगों के साथ मतभेद और स्वयं को ठीक तरह से न समझे जाने की पीड़ा भी वह डायरी में निःसंकोच व्यक्त करती है। इसीलिए डायरी घटनाओं की सूची से आगे बढ़कर उसके मन की विश्वस्त साथी बन जाती है।

चरण 2: स्नेह, आशा और भविष्य के सपने कठिन परिस्थितियों के बीच ऐन के मन में प्रेम, अपनापन और आनंद की इच्छा बनी रहती है। पीटर के प्रति उसका लगाव और उससे मिलने वाला भावनात्मक सहारा उसके सुख के क्षणों को उजागर करता है। प्रकृति और खुली हवा की लालसा, स्वतंत्र भविष्य की आशा तथा लेखिका बनने की आकांक्षा भी उसकी संवेदनशीलता प्रकट करती हैं। वह अपनी उलझनों पर विचार करती है और अपने व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करती है। इन निजी अभिव्यक्तियों से उसके किशोर मन के बदलते भाव हमारे सामने जीवंत हो उठते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन की डायरी भय और अकेलेपन के साथ स्नेह, आशा और रचनात्मक सपनों को भी सहेजती है। अतः वह उसके सुख-दुख का आत्मीय और सच्चा भावनात्मक दस्तावेज़ है।

त्वरित सुझाव: भावनात्मक पक्ष बताते समय किट्टी, अकेलापन, पीटर से लगाव और लेखिका बनने की आकांक्षा को आपस में जोड़ें।

13(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'ऐन की डायरी' एक ऐतिहासिक दौर का जीवन्त दस्तावेज़ है — इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यक्ष अनुभवों का निजी लेखन किसी ऐतिहासिक काल में सामान्य लोगों के जीवन की प्रामाणिक झलक देता है।
- ऐन की डायरी नाज़ी उत्पीड़न और द्वितीय विश्वयुद्ध को एक यहूदी किशोरी की दृष्टि से सामने लाती है।

चरण 1: उत्पीड़न और छिपे जीवन का साक्ष्य ऐन की डायरी में नाज़ियों के यहूदी-विरोधी अत्याचारों तथा द्वितीय विश्वयुद्ध के भयावह वातावरण का चित्र मिलता है। यहूदियों की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध, गिरफ्तारी की आशंका और अपने घरों से विस्थापित होने का संकट उस समय की अमानवीय परिस्थितियाँ प्रकट करते हैं। ऐन का परिवार दूसरों की सहायता से गुप्त स्थान में छिपकर रहता है। दिन में सावधानी से रहना, आवाज़ होने पर पकड़े जाने का डर और आवश्यक वस्तुओं की कठिनाई बताती है कि राजनीतिक हिंसा ने साधारण लोगों का दैनिक जीवन किस प्रकार बदल दिया था।

चरण 2: इतिहास का मानवीय और जीवंत चित्र डायरी युद्ध को केवल तिथियों, सेनाओं और शासकों का विवरण बनाकर नहीं रखती। उसमें बमबारी का भय, बाहरी समाचारों से बँधती आशा और मुक्ति की प्रतीक्षा जैसे अनुभव मिलते हैं। छिपे लोगों की सहायता करने वाले व्यक्तियों का साहस भी उस दौर में बची हुई मानवता का परिचय देता है। ऐन की छोटी इच्छाएँ, चिंताएँ और भविष्य के सपने दिखाते हैं कि अत्याचार का सामना करने वाले लोग भी हमारे जैसे संवेदनशील मनुष्य थे। व्यक्तिगत अनुभवों की यह निकटता इतिहास को पाठक के सामने जीवित बना देती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार ऐन की डायरी नाज़ी उत्पीड़न, युद्ध और यहूदियों के असुरक्षित जीवन का मानवीय साक्ष्य है। घटनाओं के साथ पीड़ितों की अनुभूतियाँ दर्ज होने से वह उस ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ बनती है।

त्वरित सुझाव: ऐतिहासिक महत्त्व के उत्तर में युद्धकालीन परिस्थितियों और ऐन के दैनिक अनुभवों के बीच स्पष्ट संबंध दिखाएँ।

13(ख). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'जूझ' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जूझने का अर्थ बाधाओं का साहसपूर्वक सामना करते हुए अपने लक्ष्य के लिए निरंतर संघर्ष करना है।
- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ में शिक्षा पाने और अपनी रचनात्मक पहचान बनाने का संघर्ष केंद्रीय है।

चरण 1: पढ़ाई के लिए पारिवारिक और आर्थिक बाधाओं से संघर्ष लेखक पढ़ना चाहता है, किंतु उसके पिता उसे खेती के काम में लगाए रखना चाहते हैं। घर का वातावरण और खेतों की ज़िम्मेदारियाँ उसकी शिक्षा में बाधा बनती हैं। वह हार नहीं मानता और अपनी माँ के साथ दत्ता जी राव की सहायता लेकर पिता को उसे विद्यालय भेजने के लिए तैयार करता है। विद्यालय जाने की अनुमति मिल जाने पर भी संघर्ष समाप्त नहीं होता। उसे खेत के काम और पढ़ाई दोनों की ज़िम्मेदारी निभानी पड़ती है। थकान और समय की कमी के बावजूद शिक्षा के प्रति उसकी लगन बनी रहती है।

चरण 2: विद्यालय में आगे बढ़ने और कवि बनने का संघर्ष विद्यालय में फिर से जमने के लिए लेखक को अपनी पढ़ाई सुधारनी पड़ती है और संकोच से बाहर आना पड़ता है। वह मेहनत तथा अनुशासन के सहारे अपनी स्थिति बेहतर बनाता है। सौंदलगेकर के अध्यापन से उसमें कविता के प्रति रुचि जगती है। खेत में काम करते हुए भी वह कविताएँ याद करता और स्वयं रचना का अभ्यास करता है। इस प्रकार वह परिस्थितियों का सामना करने के साथ अपने भीतर की क्षमता विकसित करने के लिए भी जूझता है। उसका संघर्ष केवल विद्यालय में प्रवेश पाने तक सीमित नहीं, बल्कि ज्ञान और रचनात्मक स्वतंत्रता पाने तक फैला हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का पूरा जीवन-प्रसंग विपरीत परिस्थितियों से निरंतर जूझकर शिक्षा और साहित्य की ओर बढ़ने का है। इसलिए छोटा और प्रभावशाली शीर्षक जूझ पाठ की केंद्रीय संवेदना तथा लेखक की संघर्षशीलता को सटीक रूप में व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक की सार्थकता में जूझ शब्द का अर्थ देकर खेती, शिक्षा और कविता से जुड़े तीन संघर्षों का संबंध स्पष्ट करें।

13(ग). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

क्या 'पीढ़ी के अन्तराल' को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है ? तर्क-सहित उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी की मूल संवेदना उस केंद्रीय अनुभूति को कहते हैं जो घटनाओं और पात्रों के संबंधों में बार-बार उभरती है।
- पीढ़ी का अंतराल केवल आयु का अंतर नहीं, जीवन-मूल्यों, रुचियों और सोच के बीच की दूरी है।

चरण 1: दोनों पीढ़ियों की मान्यताओं का अंतर पहचानें यशोधर बाबू सादगी, मितव्ययिता, पारिवारिक आत्मीयता और पुराने संस्कारों में विश्वास करते हैं। किशन दा का जीवन उनके लिए आदर्श है। इसके विपरीत उनके बच्चे आधुनिक रहन-सहन, आर्थिक सफलता और नई सामाजिक रीतियों को महत्त्व देते हैं। भूषण की अच्छी नौकरी और अधिक वेतन भी पिता को सहज प्रसन्न करने के बजाय नई व्यवस्था के प्रति उनके संदेह को उभारते हैं। इस प्रकार कहानी में पुरानी और नई मूल्य-दृष्टियों का टकराव लगातार उपस्थित है।

चरण 2: सिल्वर वैडिंग के आयोजन से तर्क पुष्ट करें विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आधुनिक ढंग से आयोजन बच्चों के लिए उत्सव है, पर यशोधर बाबू उसकी पद्धति और वातावरण से आत्मीय संबंध नहीं जोड़ पाते। उनकी पत्नी भी बच्चों की पसंद के साथ चलने लगी हैं, जिससे वे घर में अकेले पड़ते जाते हैं। बेटे का दिया ड्रेसिंग गाउन स्नेह का संकेत है, किंतु पिता उसमें उस सहज आत्मीय आग्रह को भी खोजते हैं जो उनकी भावनाओं को समझे। बाहरी सुविधा और उपहार के साथ भावनात्मक समझ की कमी कहानी की मार्मिकता बढ़ाती है।

चरण 3: संवेदना के मानवीय पक्ष को समझें लेखक केवल नई पीढ़ी को दोषी नहीं ठहराता। यशोधर बाबू की पुराने आदर्शों से कठोरता से बँधे रहने की प्रवृत्ति भी दूरी बढ़ाती है। बदलते समय को स्वीकार न कर पाना और परिजनों का उनकी संवेदनाओं को पर्याप्त न समझना,

दोनों मिलकर संवादहीनता तथा अकेलापन पैदा करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष हाँ, पीढ़ियों के अंतराल को कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है, क्योंकि इसी से मूल्य-संघर्ष, पारिवारिक दूरी और यशोधर बाबू की अकेलेपन की पीड़ा जन्म लेती है। इसके केंद्र में दोनों पीढ़ियों के बीच आत्मीय संवाद की आवश्यकता भी है।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में केवल उम्र का अंतर न लिखें; पिता-पुत्र की मूल्य-दृष्टि, वर्षगाँठ का आयोजन और पिता की आत्मीयता की चाह को जोड़ें।

14. 'सिल्वर वैडिंग' के कथानायक यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व हैं और नई पीढ़ी द्वारा उनके विचारों को अपनाना ही उचित है — इस कथन के पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र का आलोचनात्मक मूल्यांकन उसके गुणों के साथ उसकी सीमाओं और उनके पारिवारिक प्रभावों पर भी आधारित होता है।
- सादगी और ईमानदारी जैसे स्थायी मूल्यों को अपनाना तथा बदलते समय की उचित आवश्यकताओं को स्वीकार करना परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं।

चरण 1: कथन के विपक्ष में अपना पक्ष स्पष्ट करें मैं इस कथन के विपक्ष में हूँ कि यशोधर बाबू पूर्ण आदर्श हैं और नई पीढ़ी को उनके सभी विचार अपना लेने चाहिए। उनके व्यक्तित्व में अनेक अनुकरणीय गुण अवश्य हैं, किंतु कहानी उन्हें सीमाओं से रहित नायक के रूप में प्रस्तुत नहीं करती। नई पीढ़ी को उनके नैतिक गुणों का सम्मान करते हुए अपने समय के अनुरूप विवेकपूर्ण निर्णय लेने चाहिए। किसी भी पीढ़ी की समूची जीवन-पद्धति दूसरी पीढ़ी पर थोपना उचित नहीं है।

चरण 2: अनुकरणीय गुणों का सम्मान करें यशोधर बाबू सादगी, अनुशासन, मितव्ययिता और संबंधों की आत्मीयता को महत्त्व देते हैं। किशन दा के प्रति उनकी श्रद्धा पुराने परिचितों और उपकारों को याद रखने की संवेदनशीलता दिखाती है। उपभोग और दिखावे के स्थान पर मानवीय संबंधों को महत्त्व देना उनके व्यक्तित्व का सकारात्मक पक्ष है। नई पीढ़ी इन गुणों को अपनाकर आर्थिक सफलता के साथ संवेदनशीलता भी बनाए रख सकती है। इसलिए उनके विचारों को पूरी तरह अप्रासंगिक मानना भी अन्याय होगा।

चरण 3: व्यक्तित्व की सीमाओं को प्रसंगों से समझाएँ समस्या तब पैदा होती है जब वे किशन दा के समय की जीवन-पद्धति को वर्तमान की हर परिस्थिति की कसौटी बना लेते हैं। भूषण की अधिक वेतन वाली नौकरी और घर के आधुनिक रहन-सहन को सहज रूप में स्वीकार करने में उनकी झिझक दिखती है। विवाह की वर्षगाँठ के आयोजन में भी वे परिवार की नई रुचियों से जुड़ नहीं पाते। पत्नी और बच्चों में आए परिवर्तनों को समझने के बजाय उनसे दूरी अनुभव करना उनके अकेलेपन को बढ़ाता है। समय के साथ उपयोगी परिवर्तन स्वीकार करने में यह असमर्थता नई पीढ़ी के लिए आदर्श नहीं बन सकती।

चरण 4: पारस्परिक समझ का व्यावहारिक मार्ग बताएँ बच्चों को भी पिता के प्रति केवल उपहार देकर अपना दायित्व पूरा नहीं मानना चाहिए। उनके साथ समय बिताना और उनकी भावनाओं को समझना आवश्यक है। दूसरी ओर पिता को बच्चों की उपलब्धियों, स्वतंत्रता और बदली हुई जीवन-स्थितियों का सम्मान करना चाहिए। ड्रेसिंग गाउन का प्रसंग बताता है कि वस्तु के साथ आत्मीय व्यवहार की भी आवश्यकता है। इस प्रकार समस्या का समाधान किसी एक पीढ़ी की पूर्ण विजय में नहीं, बल्कि दोनों के बीच संवाद और सहानुभूति में है।

चरण 5: निष्कर्ष यशोधर बाबू सम्माननीय और संवेदनशील व्यक्ति हैं, पर उनके सभी विचारों का अनुकरण उचित नहीं है। नई पीढ़ी को उनकी सादगी, आत्मीयता और नैतिक मूल्यों को अपनाते हुए उनकी परिवर्तन-विरोधी जड़ता से बचना चाहिए।

त्वरित सुझाव: विपक्ष चुनते समय पात्र को पूरी तरह दोषी न बनाएँ; उसके दो गुण स्वीकार करके विशिष्ट प्रसंगों से सभी विचार अपनाने की सीमा स्पष्ट करें।

अथवा

14. नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी-व्यवस्था के आधार पर लेखक सिंधु घाटी सभ्यता को 'जल संस्कृति' कहना चाहता है। लेखक के इस विचार के पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी सभ्यता की संस्कृति उसके दैनिक जीवन, सामाजिक व्यवस्था और नगर-निर्माण में व्यक्त होती है।
- जल की उपलब्धता, सार्वजनिक स्नान और स्वच्छ निकासी को नियोजित नगर-जीवन का आधार बनाना जल संस्कृति की धारणा को सार्थक करता है।

चरण 1: लेखक के विचार के पक्ष में आधार रखें मैं सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति कहने के लेखक के विचार का समर्थन करता हूँ। मोहनजोदड़ो के अवशेषों में जल केवल उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि नगर-योजना और सामुदायिक जीवन का केंद्रीय आधार दिखाई देता है। नदी, कुएँ, स्नानागार और निकासी-व्यवस्था मिलकर बताते हैं कि जल की उपलब्धता के साथ उसके उपयोग तथा स्वच्छता की भी सुविचारित व्यवस्था थी।

चरण 2: नदी और कुओं का महत्त्व स्पष्ट करें सिंधु नदी इस सभ्यता के प्राकृतिक परिवेश और जीवन का प्रमुख आधार थी। नदी का जल कृषि तथा बस्तियों के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ देता था। नगर में अनेक कुओं की उपस्थिति यह दिखाती है कि दैनिक आवश्यकताओं के लिए जल-सुलभता का विशेष ध्यान रखा गया था। लोग केवल नदी तक पहुँचने पर निर्भर नहीं थे; नगर के भीतर भी पानी प्राप्त करने के साधन मौजूद थे। इस प्रकार प्रकृति से उपलब्ध जल को व्यवस्थित नागरिक सुविधा में बदला गया था।

चरण 3: स्नानागार से सामुदायिक दृष्टि समझाएँ विशाल सार्वजनिक स्नानागार का निर्माण जल के सामाजिक महत्त्व का सशक्त प्रमाण है। उसके कुंड तक उतरने की सीढ़ियाँ और जल को सुरक्षित रखने की निर्माण-व्यवस्था तकनीकी दक्षता दिखाती हैं। घरों में स्नान की सुविधा और सार्वजनिक स्नानागार, दोनों से स्पष्ट है कि नहाना तथा शरीर की स्वच्छता नगर-जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग थे। इतने व्यवस्थित निर्माण से सामूहिक उपयोग की सुविधाओं के प्रति सजगता भी प्रकट होती है।

चरण 4: निकासी-व्यवस्था से तर्क पूरा करें जल की व्यवस्था केवल उसे घरों तक उपलब्ध करा देने से पूरी नहीं होती; उपयोग के बाद गंदे पानी को निकालना भी आवश्यक है। घरों की नालियों का बड़ी नालियों से जुड़ना, उनका ढका होना और सुव्यवस्थित निकास नागरिक स्वास्थ्य तथा स्वच्छता की उन्नत समझ दिखाते हैं। इससे बस्तियों में गंदगी और जलभराव रोकने का उद्देश्य स्पष्ट होता है। ऐसी व्यवस्था व्यक्तिगत सुविधा के साथ पूरे नगर की भलाई को महत्त्व देती है।

चरण 5: सभी प्रमाणों का सांस्कृतिक संबंध जोड़ें नदी प्राकृतिक जलाधार है, कुएँ दैनिक जलापूर्ति के साधन हैं, स्नानागार जल के सामुदायिक उपयोग का प्रमाण है और नालियाँ स्वच्छता की व्यवस्था हैं। इन चारों का एक साथ विकसित होना संयोग नहीं माना जा सकता। यह ऐसी सभ्यता का संकेत है जिसमें नगर बनाते समय पानी और नागरिक जीवन के संबंध को गंभीरता से समझा गया था।

चरण 6: निष्कर्ष सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति कहना उचित है, क्योंकि उसके नगरों में जल की उपलब्धता, उपयोग, सार्वजनिक स्नान और निकासी एक सुव्यवस्थित नागरिक व्यवस्था के अंग थे। ये अवशेष उसकी स्वच्छता-बोध, तकनीकी कुशलता और सामुदायिक संवेदनशीलता को उजागर करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को नदी, कुएँ, स्नानागार और निकासी के चार प्रमाणों पर टिकाएँ तथा हर प्रमाण को नागरिक सुविधा या स्वच्छता से जोड़ें।